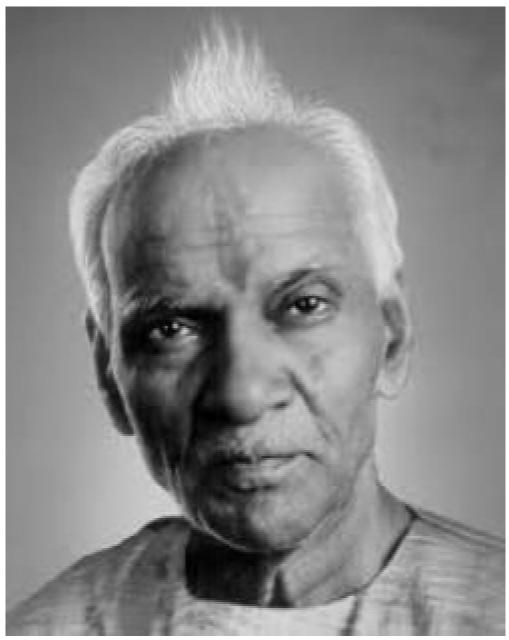
# अग्निबीज



**महान संत और युगदृष्टा पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के विभिन्न विषयों पर चुने हुए क्राँतिकारी विचार**

संकलक - प्रोफ़ेसर डॉ. ऋषि आचार्य

**राजनीती**

**"( हम ईमान सिखाते हैं )**

अध्यात्म और कोई चीज नहीं है, मात्र दृष्टि के परिष्कार का नाम है। ( अध्यात्म)

नकल क्रिया की मत कीजिए, भावनाओं की कीजिए। आपको तौल भावनाओं से करनी पड़ेगी, क्रियाओं से नहीं।
( कर्मकांड )

बेटे! कोई विधि नहीं है ऐसी, ? एक ही विधि है। कौन सी? अपना ईमान और अपनी निष्ठाएँ अपने विश्वासों की गहराइयों को मजबूत बनाता चला जा। फिर देख तू रामनाम लेता हो, तो भी तुझे मुबारक। रामनाम न भी आता हो, मरा- मरा कहता हो, तो मुबारक। मैं हमेशा यह कहता रहा हूँ और कहता रहूँगा कि विधियों के माध्यम से हम लोगों की निष्ठाओं को परिपक्व करते हैं। जनमानस का परिष्कार हमारा मूल उद्देश्य है। (कर्मकांड )

विद्या हमारी बढ़ी तो विद्या के साथ- साथ हमारा हृदय भी बड़ा होता, दिमाग की चौड़ाई बढ़ी होती। अगर ये दोनों साथ- साथ बडे और बड़े होते तो फिर चाहे हम कम पढ़े- लिखे होते अथवा ज्यादा पढे- लिखे होते, फिर हमारे ज्ञान का फायदा सारे समाज ने उठाया होता। ( दृष्टिकोण )

अगर दृष्टिकोण का परिष्कार न हो और केवल शिक्षा का एवं दिमाग का विकास हो तो मेरी बात चले तो मैं यह नहीं जानता कि मेरी बात चलेगी कि नहीं चलेगी, किंतु अगर मेरी बात चले और कोई माने तो मैं सब स्कूलों को बंद करा दूँ और ये कहूँ कि बिना पढ़े आदमी अच्छे होते हैं। ( दृष्टिकोण )

जितनी पैनी अक्ल होगी, उतने ही तीखे विनाश के साधन होंगे। इसीलिए मैं अक्ल को न उठाने की बात कहूँगा, जब तक कि हृदय को ऊँचा न उठाया जा सके, समझदारी को ऊँचा न उठाया जा सके। ( दृष्टिकोण )

मित्रो! पैसा जरूर बढ़ाना चाहिए लेकिन पैसा बढ़ाने के साथ -साथ लोगों का ईमान, लोगों का दृष्टिकोण, लोगों का चिंतन भी बढ़ाना चाहिए। ( दृष्टिकोण ) ( पैसा )

मित्रो! दृष्टिकोण के विकास की आवश्यकता नहीं समझी गई तो हमारा धार्मिक क्षेत्र भी नाकारा होता हुआ चला जाएगा। इसमें ढोंग और विडंबनाएँ जड़ जमाती चली जाएँगी, निहित स्वार्थ अपना फायदा उठाएँगे  और बेचारे भावुक लोग बेमौत मारे जाएँगे। ( दृष्टिकोण ) ( धर्म) ( कुरीतियां )

हमारा धर्मक्षेत्र अगर ढोंग और विडंबनायुक्त बना रहेगा तो नुकसानदेह बना रहेगा। इससे हानियाँ होंगी, धन की बरबादी होगी और निहित- स्वार्थ अपना थोड़ा सा फायदा करने के लिए जनता से ढेरों धन कमाएँगे। ( धर्म )

हमारा मिशन जनमानस के परिष्कार हेतु मित्रो! कर्मकाण्डों का, क्रियाकृत्यों का मैं प्रचार-प्रसार करता हूँ। आप सबको, दुनिया को कर्मकाण्ड सिखाता हूँ पर आप एक बात मत भूलना। अगर आपने यह बात (जनमानस का परिष्कार ) भुला दी तो हम अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारेंगे और हम जिस मिशन के लिए काम करते हैं, उसी को काटकर फेंक देंगे। हम इस मिशन के लिए काम करते हैं, ताकि जनमानस का परिष्कार हो।
(कर्मकांड )

आदमी का व्यक्तित्व वह है जो उसकी निष्ठाओं पर टिका हुआ है, आस्थाओं पर टिका हुआ है। अगर वह व्यक्तित्व गहरा है तो आदमी को महापुरुष कहा जा सकता है, ज्ञानी कहा जा सकता है और न जाने क्या क्या कहा जा सकता है।

( व्यक्तित्व ) ( दृष्टिकोण ) ( आत्म-विकास )

मित्रो! आदमी की जिंदगी अगर बदल जाए दृष्टिकोण बदल जाए तो मामूली आदमी, जिसमें हम और आप भी शामिल हैं, ऐसे- ऐसे काम कर सकते हैं, जो दुनिया के इतिहास में अजर- अमर रह सकें।

( दृष्टिकोण ) ( आत्म-विकास )

मित्रो! आदमी का ईमान कितना प्रभावशाली होता है, आदमी की अंतरात्मा कितनी शक्तिशाली होती है, आपने कभी अंदाज ही नहीं लगाया है।

(व्यक्तित्व ) ( आत्म-विकास )

आदमी के ईमान से ज्यादा कशिश और प्रभावशाली ताकत दुनिया में और कोई नहीं है। दुनिया में मनुष्य के उच्च दृष्टिकोण के अतिरिक्त और किसी में भी इतनी ताकत नहीं है।

( व्यक्तित्व ) ( आत्म-विकास )

मित्रो! भजन में अगर ताकत है तो वह आदमी के ईमान से मिली हुई ताकत है। भजन से बड़ा ईमान है। भजन बड़ा नहीं, छोटा है ईमान से। ईमान बड़ा है।

( व्यक्तित्व ) ( साधना ) ( धर्म)

साथियो! मैं आपसे यह कह रहा था कि आदमी की जड़ें नीचे रहती हैं, जिनको हम सिद्धांत कहते हैं, आदर्श कहते हैं, आस्थाएँ कहते हैं, मान्यताएँ कहते हैं। हम आपसे बराबर निवेदन करते आ रहे हैं कि आप स्वयं अपन जीवन में दृष्टिकोण का परिष्कार करें।

( दृष्टिकोण )

**जीवन साधना करें, देवता बनें**

मित्रो! देवता होने के लिए थोड़े से प्रयास करने पड़ेंगे और उस प्रयास का नाम है- जीवन-साधना। ( साधना )

साधना किसे कहते हैं? बेटे! अनगढ़ को सुगढ़ बनाने का नाम साधना है। ( साधना )---

मित्रो! जीवन को सुसंस्कृत बना देना एक बहुत बड़ा काम है। हमारा व्यवहार और हमारा चिंतन बदले। हमारे चिंतन में संस्कृति और व्यवहार में सभ्यता आए। व्यवहार में जब हम सभ्यता ले आते हैं तो हम सुसंस्कृत हो जाते हैं।

(व्यक्तित्व ) ( दृष्टिकोण )

हमारे व्यवहार में शालीनता, शिष्टता और अच्छाई जब समाविष्ट हो जाती है तो उसको सभ्यता कहते हैं। सभ्यता से हम जीवन को परिष्कृत करते हैं।

( दृष्टिकोण ) ( सभ्यता - संस्कृति )

संस्कृति किसे कहते हैं? संस्कृति कहते हैं -विचार करने की शैली को, चिंतन को, भावना को और दृष्टिकोण को। जब हमारा दृष्टिकोण परिष्कृत होता हुआ चला जाता है तो फिर मजा आ जाता है।

( सभ्यता - संस्कृति )

जीवन को साध लेने का नाम ही साधना है। (साधना )

अगर हमारे भीतर हिम्मत हो तो हमारे सामान्य शरीर कितने बड़े, कितने समर्थ हो सकते हैं और क्या से क्या करते चले जा सकते हैं।

(व्यक्तित्व ) ( आत्म-विकास )

कितनी विशेषताएँ हमारे अंदर हैं। इनमें से एक एक गुण, एक- एक कर्म, एक- एक आदत, स्वभाव को हम बनाएँ तो हमको सिद्धियाँ मिल सकती हैं।

(व्यक्तित्व ) ( आत्म-विकास )

मित्रो! हमारे अपने जीवन की साधना में एक घंटा रोज पढ़ने का, अध्ययन का क्रम हमेशा रहा। टहलते भी रहे और एक घंटा पढ़े भी। दोनों का हमने जिंदगी भर सम्मिश्रण रखा है। इस सत्तर वर्ष की उम्र में से पंद्रह वर्ष तो आप निकाल दीजिए। पचपन साल तक हमने यह क्रम एक घंटा रोज स्वाध्याय का जारी रखा है। उस स्वाध्याय का परिणाम क्या हुआ? उसका परिणाम यह हुआ कि हमने दस लाख पन्ने पढ़ लिए आप कागज पेन्सिल लेकर हिसाब लगा लीजिए। हमने उपयोगी विषय पढ़े हैं, काम के विषय पढ़े हैं।

( स्वयं के बारे में )

हाँ हम सरस्वती के पुत्र हैं, क्योंकि हमने स्वाध्याय से प्रेम किया है। स्वाध्याय के प्रेम में दिलचस्पी हो तो यही सरस्वती का प्रेम है। सरस्वती का यही प्रेम आपको निहाल करा सकता है, विद्वान बना सकता है। यह कोई अचंभे की बात नहीं है।

( स्वयं के बारे में )

साधना, क्रमबद्धता, नियमितता और व्यवस्था अगर जीवन में लाई जा सकती हो तो आदमी कमाल कर सकता है, चमत्कार दिखा सकता है।

( साधना ) ( आत्म-विकास )

मित्रो! अपनी एक ऐसी दुनिया बसा करके रखिए जिसमें आप उन श्रेष्ठ लोगों की सलाह लेना। ( आत्म-विकास )

बेटे! श्रेष्ठ चरित्र वाले व्यक्ति और महिलाएँ जहाँ कहीं भी हों, उनका तू कहना मान, उनकी शिक्षाएँ मान, उनके संदेशों, उनके निर्देशों पर चल। अगर ऐसा करेगा तो वह संतों की दुनिया, ऋषियों की दुनिया, ज्ञानियों और तपस्वियों की दुनिया तुझे सलाह और सहारा देती रहेगी। आगे बढ़ाती रहेगी, ऊँचा उठाती रहेगी और तू देवता बनने की जीवन साधना के मार्ग पर चलता रहेगा |

( आत्म-विकास )

अपने मन में एक ऐसी गुफा बना ले, अपने मस्तिष्क में एक ऐसी दुनिया बसा ले, जिसमें कि श्रेष्ठ व्यक्ति, श्रेष्ठ आचार, श्रेष्ठ शिक्षाएँ भरी पड़ीं हों। इतना अगर तू कर पाए तो समझ ले कि तेरी दुनिया बस गई। फिर इस दुनिया से लड़ने में तू समर्थ है, भव- बंधनों से लड़ने में समर्थ है।

( आत्म-विकास )

एक बात मैं आपसे यह कहूँगा कि जीवन की दिशाएँ- धाराएँ जिस चीज से और जहाँ से प्रारंभ होती हैं, उस चीज का नाम है- मनुष्य की इच्छाएँ- आकांक्षाएँ।

( जीवन ) ( आत्म-विकास )

अगर हम अपनी इच्छाओं का दायरा बदल दें तो वे इच्छाएँ जो कभी पूरी नहीं हो पाती हैं, पूरी होनी शुरू हो जाएँ। हमारा दृष्टिकोण यदि ऐसा हो जाए कि हम सिद्धांत और आदर्श अपनाएँ, सत्य पर चलना चाहें, ईमानदारी से रहना चाहें तो इसमें कोई कठिनता नहीं आती।

( जीवन ) ( आत्म-विकास )

मित्रो! हमारा जीवन सुगम है, अगर हम अपनी आकांक्षाएँ सत्य पर, न्याय पर टिका दें, सादगी और सिद्धांतों के ऊपर टिका दें तो इसमें कोई कठिनाई नहीं आ सकती। फिर हम शांति से जीवन जी सकते हैं। हमारी इच्छाएँ सेकण्डों में पूरी होनी संभव हैं।

( जीवन ) ( आत्म-विकास )

आप आवश्यक आवश्यकताओं को पूरा करने तक सीमित हो जाएँ तो आपकी ८० फीसदी समस्याएँ खतम हो जाएँगी।
( जीवन ) ( आत्म-विकास )

घटिया, छोटी, नगण्य और बेकार इच्छाएँ जिनके बिना हमारा न कोई काम हर्ज हो रहा है और न जिनको प्राप्त करने से कोई उद्देश्य पूरा होता है।एक महत्त्वपूर्ण शिक्षण जीवन बदलने वाला यह है कि हम अपनी इच्छाओं को परिष्कृत करें।

( जीवन ) ( आत्म-विकास )

आप अपने कर्तव्य को समझना शुरू कीजिए कर्मयोगी बनिए, फर्ज, कर्तव्य पूरा करिए बस |

( कर्मयोग ) ( आत्म-विकास )

भविष्य का अध्ययन करना छोड़ दीजिए; भविष्य का विचार छोड़ने का मतलब यह नहीं है कि आप यह विचार भी न करें कि हम किसी का भला करने जा रहे हैं या बुरा करने जा रहे हैं। आप तय कर लीजिए कि हमको ये काम करना है | हम नहीं जानते कि कल क्या होने वाला है। कल की कल्पनाओं, कल की आकांक्षाओं में बेकार दिमाग न खराब करें।

( कर्मयोग ) ( आत्म-विकास )

बेटे! भविष्य की कल्पनाएँ करना बंद कर, भूतकाल की शिकायतें करना बंद कर। भूत अच्छा गया तो गया, बुरा गया तो गया। उसने गलती की तो, तूने गलती की तो, अब भूतकाल तो किसी तरह वापस नहीं आ सकता। हमें आज क्या करना है, इस पर विचार कर।

( कर्मयोग ) ( आत्म-विकास )

मित्रो! कर्मयोगी वह है, जो वर्तमान पर दृष्टि रखता है। अपनी सारी समझ, अक्ल, बुद्धि,मेहनत और मनोयोग अपने कर्तव्य को, कर्म को अच्छा बनाने के लिए लगाता है।

( कर्मयोग ) ( आत्म-विकास )

काम के साथ में ईमानदारी, एक- जिम्मेदारी, दो- सुरुचि- खूबसूरती, तीन- तन्मयता, तत्परता, उत्साह, जोश, बारीकी मिली हो प्यार मिला हो, चार- काम को हम ऐसे ढंग से करें कि सामान्य होकर भी असामान्य हो जाए। ऐसे असामान्य कार्यों को हम कर्मयोग कहते हैं।

( कर्मयोग ) ( आत्म-विकास )

हमको और आपको कर्मयोगी बनना चाहिए अगर हम कर्मयोगी बनते हैं और अपने दिमाग को संतुलित बनाए रखते हैं तो हमारी जिंदगी में आनंद आ जाता है।

( कर्मयोग ) ( आत्म-विकास )

मित्रो, क्या करना चाहिए? हमको अपनी सामर्थ्य को सार्थक, रचनात्मक कार्यों, सृजनात्मक और विकासोन्मुख कामों में लगाना चाहिए। जिसमें हमारा, हमारे घर वालों का, हमारे पड़ोसियों का, समाज का और देश का विकास होता हो, दूसरों की भलाई होती हो।

( कर्मयोग ) ( आत्म-विकास )

हम व्यर्थ, अनर्थ कार्यों और दुष्टता से बचें तो आप देखेंगे कि हमारे पास ढेरों की ढेरों शक्ति सामर्थ्य, बुद्धि, अक्ल, भावनाएँ बाकी बच जाती हैं। हम उनको अगर सार्थक सृजनात्मक कामों में लगाना शुरू करें तो आप देखेंगे कि कैसा चमत्कार होता है आपके जीवन में। आपको ऊँचा उठने का आपकी उन्नति के लिए कैसे रास्ता खुलता है? आप जो भी लक्ष्य बना करके चलेंगे, उसमें विद्वान बनते हुए चले जाएँगे।

( कर्मयोग ) ( आत्म-विकास )

मित्रो! अगर आपको श्रेष्ठ जीवन जीना है, देवत्व की दिशा में बढ़ना है तब, एक काम जरूर करना। हमारे जीवन की दुकान में भी दो हिस्सेदार हैं। कौन- कौन हिस्सेदार हैं? एक हमारा

शरीर और एक हमारी जीवात्मा। जीवात्मा परमात्मा के लिए और शरीर यात्रा दोनों के लिए हमारा संतुलित विभाजन होना चाहिए।

( जीवन ) ( आत्म- विकास )

भगवान तेरा श्रम माँगता है, तेरा पसीना माँगता है, तेरा समय, तेरा वक्त माँगता है। तेरा ईमान, तेरी भावना और तेरी श्रद्धा माँगता है।

( भगवान )

हमारी दो संपदाएँ हैं- एक भगवान की दी हुई, एक मनुष्य की दी हुई। भगवान की दी हुई संपदा का नाम है -समय। ये भगवान की संपत्ति है और मनुष्य की कमाई है- पैसा। ये दोनों ही साधन हमारे पास हैं, इन दोनों साधनों का उपयोग आप विभाजित रूप से किया कीजिए।

(भगवान ) (पैसा )

हमको कुछ इस तरह से विभाजन करना चाहिए कि हमारे समय का इतना हिस्सा शारीरिक जीवन के लिए और इतना परमात्म जीवन के लिए। इतना लोकमंगल के लिए और इतना हमारे लिए।

( भगवान ) ( समाज ) ( आत्म-विकास )

आध्यात्मिक जीवन आपसे यह कहता है कि आप समाज के ऋणी हैं।इस ऋण को चुकाने के लिए जो हमारे पास है, उसका एक मुनासिब हिस्सा निकालने के लिए हमको कोशिश करनी चाहिए।

(अध्यात्म ) ( समाज )

मित्रो! आप आध्यात्मिक जीवन जीना चाहते हैं तो सचाई पर आइए वास्तविकता पर आइए। इस कठोर सचाई को, वास्तविकता को समझिए, अगर आप वास्तविक अध्यात्म को पाना चाहते हैं, वास्तविक भगवान को पाना चाहते हैं, वास्तविक उन्नति करना चाहते हैं, वास्तविक प्रतिभा को चाहते हैं, वास्तविक देवत्व चाहते हैं तो उसकी वास्तविक कीमत चुकाइए।

(अध्यात्म ) ( समाज )

----------------

## जीवंत विभूतियों से भावभरी अपेक्षाएँ

मित्रो! आपको जहाँ कहीं भी चमक दिखाई पड़ती है, वो सब भगवान की विशेष दिव्य विभूतियाँ हैं और जहाँ कहीं भी जितना अधिक विभूतियों का अंश है, यह मानकर के हमको चलना पड़ेगा कि यहाँ इस जन्म में अथवा पहले जन्मों में इन्होंने किसी प्रकार से इस संपत्ति का उपार्जन किया है।

( प्रतिभा - विभूतियाँ ) ( भगवान )

विभूतियाँ जहाँ कहीं भी दिखाई पड़े, उनको आप यह मानकर चलना कि वे भगवान का विशेष अंश हैं। विशेष अंश जो उनके भीतर है, वह जहाँ कहीं भी हो, उस अंश को जाग्रत करना, उसको उद्‌बोधन करना और सोए हुओं को जगाना हमारा- आपका विशेष काम है।

( प्रतिभा - विभूतियाँ ) ( भगवान )

समझदारी जहाँ कहीं भी होगी, न जाने क्या से क्या करती चली जाएगी? समझदार आदमी आर्थिक क्षेत्र में चला जाएगा, तो वो मोनार्क पैदा हो जाएगा और हेनरी फोर्ड पैदा हो जाएगा। गहरी समझदारी की बडी कीमत है।

( समझदारी )

मित्रो! अक्ल बड़ी जबरदस्त है और आदमी का प्रभाव, जिसको में प्रतिभा कहता हूँ विभूति कहता हूँ यह विभूति बड़ी समझदारी से भरी है। अगर यह विभूति आदमी के अंदर हो, जिसको मैं आदमी का तेज कहता हूँ चमक कहता हूँ तो वह आदमी जहाँ कहीं भी जाएगा, वो टॉप करेगा। वह टॉप से कम कर ही नहीं सकता।

( समझदारी ) ( प्रतिभा - विभूतियाँ )

प्रतिभा अपने आप में एक जबरदस्त वस्तु है। वह जहाँ कहीं भी चली जाएगी, जिस दिशा में भी चली जाएगी, चाहे वह जहाँ कहीं भी जाएगी, पहले नंबर का काम करेगी।

( प्रतिभा - विभूतियाँ )

मित्रो! जिंदगी की बड़ी कीमत है। जिंदगी लाखों रुपये की कीमत की है, करोड़ों रुपये की है, अरबों- खरबों रुपये की कीमत की है।

( जीवन )

मित्रो! क्षमताएँ जिनके अंदर हैं प्रतिभाएँ जिनके अंदर हैं, वह कहीं से कहीं जा पहुँचता है।

( प्रतिभा - विभूतियाँ )

भगवान जहाँ कहीं भी अपना अंश देता है, विभूति देता है, उसके अंदर चमक होती है, लगन होती है, उसके अंदर तड़प होती है |

( प्रतिभा - विभूतियाँ )

आपके जिम्मे मैं एक काम सुपुर्द कर रहा हूँ कि जहाँ भी आपको जिंदा आदमी मालूम पड़े, जिंदादिल आदमी मालूम पड़े, आप उनके पास जाना। आप उनको मेरा संदेश लेकर के जाना और खुशामद करने के लिए जाना और यह कहना कि भगवान ने जो विशेषताएँ आपके अंदर दी हैं, आपके अंदर जो प्रतिभा है, जो क्षमता है और जो आपके अंदर विशेषता है, उसके लिए भगवान ने निमंत्रण दिया है, समय ने निमंत्रण दिया है। युग ने निमंत्रण दिया है, मनुष्य जाति के गिरते हुए भविष्य ने और यह कहा है कि पेट भरने के लिए आपको जिंदा रहना काफी नहीं है।

( युगशिल्पियों के प्रति ) ( प्रतिभा - विभूतियाँ )

मित्रो! आप वहाँ जाना और लोगों से यह कहना कि अगर कहीं आपके अंदर जिंदादिली हो, तो आपको समय की पुकार सुननी चाहिए। और युग की पुकार सुननी चाहिए। समय की माँग को पूरा करना चाहिए और युग की माँग को पूरा करना चाहिए | मित्रो! मैं आपको अंगद के तरीके से संदेशवाहक बनाकर के भेजता हूँ।

( युगशिल्पियों के प्रति ) ( प्रतिभा - विभूतियाँ )

मेरे गुरु ने मुझे संदेशवाहक बनाकर भेजा। हिंदुस्तान से बाहर कई बार अंगद की तरह से मैं केवल संदेशवाहक के रूप में गया ई। मैंने कोई व्याख्यान नहीं दिए और न संगठन किए। सारे के सारे देशों में, विदेशों में और न जाने कहाँ से कहाँ गया, लेकिन अपने गुरु का संदेश लेकर के गया। मैंने लोगों से कहा, देखो अपने को बदल दो। समय बदल रहा है। परिस्थितियों बदल रही हैं।

( स्वयं के बारे में )

साथियो! जहाँ कहीं भी जाएँगे, वहाँ आप लोगों से कहना कि समय बहुत जबरदस्त है। समय सबसे बड़ा है। धन बडा नहीं है। जहाँ कहीं भी विभूतियों आपको दिखाई पड़ती हों, वहाँ आप हमारे संदेशवाहक के रूप में जाना, जैसे कि हमारे गुरुजी ने सारी दुनिया के जबरदस्त आदमियों के पास और भावनाशील आदमियों के पास हमको संदेश देकर के भेजा।

( युगशिल्पियों के प्रति ) ( प्रतिभा - विभूतियाँ )

मित्रो! जहाँ कहीं भी क्षमताएँ दिखाई पड़े, प्रतिभाएँ दिखाई पड़े, वहाँ आप हमारे संदेशवाहक के रूप में जाना और खासतौर से उनसे प्रार्थना करना, अनुरोध करना।

( युगशिल्पियों के प्रति ) ( प्रतिभा - विभूतियाँ )

मित्रो! आपको समय से पहले बदल जाना चाहिए नहीं तो आपको पश्चात्ताप ज्यादा करना पड़ेगा।

( समय ) (  आत्म - विकास )

आपको भगवान ने जो विभूतियाँ दी हैं, क्षमताएँ दी हैं, उसका सबाब आप उठा सकते हैं, लाभ उठा सकते हैं, जीवात्मा को शांति दे सकते हैं। जीवात्मा की शांति के लिए, पुण्य के लिए अपने आप को तैयार कर लेना चाहिए, ताकि आपका अंतःकरण शांति में रहे और समाज को भी आपके बदले का अनुदान मिले और हमारा सिर भी गर्व से ऊँचा उठ जाए।

( युगशिल्पियों के प्रति ) ( प्रतिभा - विभूतियाँ )

मित्रो! जो नौजवान हैं, प्रतिभावान हैं, विभूतिवान हैं, उनसे मेरा संदेश कहना। लेकिन जो व्यक्ति मानसिक दृष्टि से बुड्ढे हो गए हैं, वे जवान हों तो क्या, सफेद बाल वाले बुड्ढे हों तो क्या, हमको उनकी जरूरत नहीं है। क्यों? क्योंकि वे मौत के शिकार हैं। वे इसी के लिए हैं कि जब मौत को चारे की जरूरत पड़े, तो वे उसकी खुराक का काम करें।

( युगशिल्पियों के प्रति ) ( प्रतिभा - विभूतियाँ )

------

**कर्मकाण्ड की प्रेरणाओं में छिपा अध्यात्म**

आध्यात्मिकता का जो प्राण है, वह चेतना से संबंध रखता है। उसका हमारे क्रिया- कलापों से कोई ताल्लुक नहीं है।

( अध्यात्म )

कर्मकाण्ड जिसके बारे में लोगों ने यह ख्याल बनाकर रखा है कि यह कर्मकाण्ड करने से उनको यह फायदा हो जाएगा और अमुक कर्मकाण्ड करने से उनको यह सिद्धि मिल

जाएगी। यह कर्मकाण्ड करने से अमुक देवी प्रसन्न हो जाएगी और यह कर्मकाण्ड करने से अमुक देवता प्रसन्न हो जाएगा। मित्रो! यह नहीं हो सकता।

( कर्मकांड ) ( कुरीतियां )

अध्यात्म के सारे के सारे लाभ अगर कहीं हैं तो उस स्थान पर हैं, उस मर्मस्थल से जुड़े हैं, जहाँ आदमी का प्राण, जहाँ आदमी की चेतना और जहाँ आदमी की निष्ठाएँ और विश्वास काम  करते हैं और जहाँ से आदमी का जीवन प्रभावित होता है।

(अध्यात्म )

जिसे आप पूजा कहते हैं, पाठ कहते हैं, कथा कहते हैं और रामायण कहते हैं, इसको मैं खेल भी कह सकता हूँ। यह सारे के सारे खेल इसलिए खड़े किए गए हैं, ताकि आदमी का विश्वास, आदमी का चिंतन, आदमी के विचार और आस्थाएँ परिष्कृत होती चली जाएँ विकसित होती चली जाएँ।

( कर्मकांड ) ( कुरीतियां )

देवी जी की खुशामद कर लें, संतोषी माता जी की खुशामद कर लें, गणेश जी की खुशामद कर लें, हनुमान जी की खुशामद कर लें, बस, आपका काम सिद्ध हो जाएगा और आपका उल्लू सीधा हो जाएगा। अगर मैं ऐसे विश्वास जमाने वाला होऊँ तो मैं अध्यात्मवाद के साथ और जीवों की जीवात्मा के साथ और जिन्होंने यह सारा का सारा अध्यात्मवाद का कलेवर खड़ा किया है, उन सबके साथ विश्वासघात करने वाला होऊँ।

( कर्मकांड ) ( कुरीतियां )

मित्रो! आध्यात्मिकता के बारे में एक गलतफहमी कितनी ज्यादा कष्टकारक, कितनी ज्यादा अज्ञान से भरी हुई, कितनी ज्यादा मूर्खतापूर्ण और कितनी ज्यादा अनैतिक है- ' इम्मोरल '' है, जिसमें हमें बता दिया गया कि यह कार्य करने से और यह कथा सुनने से यह फायदा हो सकता है। कथा सुनने मात्र से अगर कोई फायदे रहे होते तो रोज कथाएँ होती रहती हैं और इन्हें सुनने वालों का कोई न कोई फायदा, कोई न कोई उद्धार हो गया होता।
( आध्यात्म ) ( कर्मकांड ) ( कुरीतियां )

मित्रो! कोई दिन आएगा, जब आप देखेंगे कि हम आध्यात्मिकता की दीक्षा में कम्युनिस्टों को सबसे पहले लेंगे, क्योंकि वे विचारशील हैं।
( आध्यात्म )

मित्रो! आस्तिकता का मूलभूत सिद्धांत है- कर्मफल। आदमी को श्रेष्ठ कर्म करना चाहिए और बुरे कमी से अपना बचाव करना चाहिए। आध्यात्मिकता का मूलभूत सिद्धांत यह है कि आदमी अनैतिक आचरण से बचे और श्रेष्ठ आचरण की ओर चले। मनुष्य अवांछनीयताओं से दूर हो और वांछनीयता की ओर चले।
( कर्मयोग )

हमको अध्यात्म इसलिए सिखाया गया था कि आदमी श्रेष्ठ जीवन जिए। सामाजिक जीवन जिए, चरित्रनिष्ठ जीवन जिए, आदर्श जीवन जिए। इसका एक ही कारण था। सारे के सारे धर्मशास्त्र इसीलिए बनाए गए थे, पूजा पाठ इसीलिए बनाए गए थे, जप- तप इसीलिए बनाए गए थे, सारी की सारी चीजें इसीलिए बनाई गई थीं।
( आध्यात्म )

कर्मकाण्ड कराने के पश्चात सवा रुपया देकर के, देवी- देवताओं के पत्थर के खिलौनों को देखने के पश्चात आपने ये ख्वाब बना रखे हैं कि हमको वो सद्‌गति मिलने वाली है, भगवान का प्यार मिलने वाला है। हमारा कल्याण होने वाला है। इसके लिए हमको आदर्श जीवन जीने की कोई जरूरत नहीं है। छोटा मोटा कर्मकाण्ड कर लीजिए। अरे दुष्टो! यह क्या कर रहे हो? अरे अभागो! यह क्या कर रहे हो? आध्यात्मिकता के सिद्‌धांतों का सत्यानाश कर रहे हो।

( कर्मकांड ) ( कुरीतियां )

यज्ञ- संस्कार आदि कर्मकाण्ड भारतीय ऋषि- मनीषियों द्‌वारा लंबी शोध एवं प्रयोग- परीक्षण द्‌वारा विकसित असामान्य क्रियाकृत्य हैं। इनके माध्यम से महत् चेतना तथा मानवीय पुरुषार्थ की सूक्ष्म योग साधना को दृश्य श्रव्य ( ऑडियो विजुअल) स्वरूप दिया गया हैं। इसमें अनुशासनबद्‌ध स्थूल क्रिया- कलापों के द्‌वारा अंतरंग की सूक्ष्म शक्तियों को जाग्रत एवं व्यवस्थित किया जाता है।
( आध्यात्म ) ( कर्मकांड )

कर्मकाण्ड के क्रिया- कृत्यों को ही सब कुछ मान बैठना या उन्हें एकदम निरर्थक मान लेना, दोनों ही हानिकारक हैं। उनकी सीमा  भी समझे लेकिन महत्त्व भी न भूलें। संक्षिप्त करें; पर श्रद्‌धासिक्त मनोभूमि के साथ ही करें, तभी वह प्रभावशाली बनेगा और उसका उद्‌देश्य पूरा होगा।

( कर्मकांड )

यज्ञादि कर्मकाण्ड द्वारा देव आवाहन, मंत्र प्रयोग, संकल्प एवं सद्भावनाओं की सामूहिक शक्ति से एक ऐसी भट्ठी जैसी ऊर्जा पैदा की जाती है, जिसमें मनुष्य की अंत :प्रवृत्तियों तक को गलाकर इच्छित स्वरूप में ढालने की स्थिति में लाया जा सकता है।

( कर्मकांड ) ( यज्ञ )

यज्ञ संस्कार आदि ऐसे सूक्ष्म- विज्ञान के प्रयोग हैं, जिनके द्वारा मनुष्य के व्यक्तित्व का कायाकल्प कर सकने वाली उस गहराई को भी प्रभावित, परिवर्तित किया जा सकता है।

( कर्मकांड ) ( यज्ञ )

कर्मकाण्ड का प्रभाव उसके विस्तार और कलेवर के आधार पर नहीं, उसके समग्र तथा प्राणवान होने पर निर्भर करता है।

( कर्मकांड )

---------------

**धर्मतंत्र का परिष्कार अत्यंत अनिवार्य**

व्यक्ति एवं समाज के ऊपर नियंत्रण करने वाली दो ही शक्तियाँ मुख्य हैं। एक शक्ति का नाम धर्मतंत्र और दूसरी का नाम है- राजतंत्र राजतंत्र मनुष्य के ऊपर नियंत्रण करता है और धर्मतंत्र मनुष्य के भीतर श्रेष्ठताओं और रचनात्मक प्रवृत्तियों को ऊपर उठाता है, उभारता है।

( धर्म ) ( राजनीती )

राजनीति यदि ठीक हो, राजसत्ता यदि ठीक हो, तो मनुष्यों की धार्मिकता, विचारणा, आध्यात्मिकता और श्रेष्ठता अक्षुण्ण बनी रहेगी और यदि मनुष्यों की धर्मबुद्धि ठीक हो, तो उसका परिणाम राजनीति पर हुए बिना नहीं रहेगा।
( राजनीती )

धर्म के मार्ग पर जो रुकावटें पैदा हों या जो कठिनाइयाँ हों, उनको दूर करना राजसत्ता का काम है और राजसत्ता में जो विकृतियाँ पैदा हों, उनको नियंत्रित करना धर्मसत्ता का काम है।
( राजनीती ) ( धर्म )

जिसके मन में भगवान् की, देश और धर्म की लगन लगी हुई हो, वह एक ही आदमी कितना बड़ा काम कर सकता है।
( आत्म विकास )

समाज का संरक्षण और शिक्षण करने के लिए भावनाओं की जरूरत है, प्रभाव की जरूरत है, लगन और परिश्रम की जरूरत है।
( समाज)

भारतवर्ष में सात लाख गाँव हैं। यदि छप्पन लाख संत- महात्मा इस देश में काम करने के लिए खड़े हो गए होते, तो वह काम कर दिखाया होता कि हमने राष्ट्र का नया निर्माण ही कर लिया होता।

( भारत ) ( युग शिल्पियों से )

अगर एक महात्मा झाड़ू लेकर चल पड़े, तो बाकी लोग उसका तमाशा देखते रहें, ऐसा तो नहीं हो सकता। गाँव के लोग भी श्रमदान के लिए चलेंगे, तो जहाँ गाँव की गलियों- कूचों में हर जगह गंदगी- ही दिखाई पड़ती है, वहाँ स्वच्छता दिखाई देने लगे। एक महात्मा पेशाबघर और चलते- फिरते शौचालय बनाने के लिए फावड़ा लेकर खड़ा हो जाए, तो गाँव वालों को शर्म नहीं आएगी क्या!

( भारत ) ( युग शिल्पियों से )

ब्याह- शादियों में होने वाला खरच हिंदुस्तान के सिर पर कलंक के तरीके से है। धन का कितना अपव्यय होता है। लोगों में गरीबी और बेईमानी पैदा करने के लिए मजबूर करता है। इससे सारे राष्ट्र की जड़ें खोखली हो गई हैं।
( कुरीतियां ) ( भारत )

धर्मतंत्र की संपदा एक तरह का रिजर्व बैंक है। अगर धर्मतंत्र की संपदा भोग- प्रसाद लगाने, मिठाई बाँटने, पंडे- पुजारियों का पेट पालने, शंख- घड़ियाल बजाने और कर्मकाण्ड करने की अपेक्षा जनमानस को ऊँचा उठाने के लिए लगा दी गई होती, तो मजा आ जाता!

( धर्म ) (कुरीतियां )

यदि धर्मतंत्र को सही दिशा देना संभव रहा होता, तो न केवल हिंदुस्तान, बल्कि सारी दुनिया को ठीक कर लिया गया होता।

( धर्म )

अपने देश में सिर्फ धर्मभीरुता है, धर्मभावना नहीं है। धर्मभीरुता और धर्मभावना में जमीन-आसमान का फरक है।

( भारत ) ( धर्म )

साथियो! अपने देश की सांस्कृतिक, सामाजिक सेवा और नैतिक उत्कर्ष के लिए धन की जरूरत है। इतनी बड़ी धन की शक्ति, भावनाओं की शक्ति, इतनी बड़ी जनशक्ति, जो कि आज बिखरी पड़ी है और अवांछनीय दिशा में प्रवाहित हो रही है। आवश्यकता इस बात की है कि नई पीढ़ी के समझदार- विवेकशील लोग इस धर्म के अपव्यय को रोकें।

( भारत ) ( युगशिल्पियों के प्रति )

मैं आह्वान करना चाहता हूँ उन सब लोगों का, जिनके अंदर देशभक्ति और विश्वमानव की पीड़ा विद्यमान है, जो समाज का हित साधन करना चाहते हैं, जो लोकमंगल के लिए कदम बढ़ाना चाहते हैं; उनको धर्म के विकृत स्वरूप का समाधान करने, धार्मिक भावनाओं और जनशक्ति को ठीक दिशा देने के लिए कदम बढ़ाकर आगे आना ही चाहिए। अगर ऐसा नहीं किया गया, तो राष्ट्र और विश्व की प्रगति के लिए एक भारी अभाव बना ही रहेगा। इतनी बड़ी पूँजी, जनशक्ति और भावनाशक्ति का दुरुपयोग होता ही रहेगा। इसको ठीक करना अब राष्ट्र की महती आवश्यकता है।

( भारत ) ( युगशिल्पियों के प्रति )

भगवान् तो एक विचारणा है, भावना है, एक चेतना है। भगवान् की वृत्तियों और प्रवृत्तियों को हम लोग भूल गए हैं। उनको स्मरण दिलाने के लिए ही मंदिर, चेतना केन्द्र बनाए गए हैं, जिसके माध्यम से भगवान् की वृत्तियों को सर्वसाधारण के मनों तक पहुँचाना संभव हो सकेगा। गाँवों में देवालय इसीलिए बनाए गए हैं कि जो लोग भगवान् को भूल गए हैं, वे इस माध्यम से अपने जीवन लक्ष्य को पहचानें।

( भगवान)

भगवान् तो हृदय में, घट- घट में समाया हुआ है और वह मनुष्य के द्वारा अच्छी वृत्तियों को पूरा किया जाना देखना चाहता है।

( भगवान )

मंदिर वस्तुतः जन- जागरण के केन्द्र थे।  मंदिर थे, गुरुद्वारे थे, पर तब उनमें लोकसेवा की, लोकमानस के परिष्कार की कितनी तीव्र प्रक्रिया विद्यमान थी।
( धर्म )

मित्रो! मंदिर जन- जागरण के केन्द्र बनाए जा सकते हैं। मंदिरों का उपयोग लोकमंगल के लिए किया जा सकता है। आज तो मंदिरों की दशा देखकर हँसी आती है और क्रोध भी। आज मंदिरों का सारा- का धन कुछ चंद लोगों के निहित स्वार्थ के लिए खरच हो जाता है। जो कुछ भी चढ़ाया या दान आया, कुछ निहित स्वार्थ के लिए मठाधीशों और मंदिरों के स्वामी और दूसरे महंतों के पेट में चला गया।

(धर्म )  ( युगशिल्पियों के प्रति )

पुजारियों को, महंतों को यह कहा जाना चाहिए कि आप अगर अपनी श्रद्धा को कायम रखना चाहते हैं, जनता के मन पर अपनी छाप को कायम रखना चाहते हैं, तो आप लोकसेवी के तरीके से जिएँ और इस मंदिर को लोकसेवा का केन्द्र बनाएँ।

(धर्म ) ( युगशिल्पियों के प्रति )

भगवान् तो एक ही है। उनको ही शंकर कह दीजिए, गणेश कह दीजिए, हनुमान जी कह दीजिए। अनेक भगवान् नहीं हो सकते, हाँ उनके नाम अनेक हो सकते हैं।

( भगवान )

अब हमको प्रगतिशील मंदिरों की स्थापना की आवश्यकता है। समाज का नया निर्माण करने के लिए नए- नए रचनात्मक केन्द्र खोले जाने चाहिए।
( धर्म ) ( युगशिल्पियों के प्रति ) ( समाज )

ये मंदिर हिंदू धर्म की श्रद्धा के केन्द्र हैं। उनको अब दिशा दी जानी चाहिए, नया मोड़ दिया जाना चाहिए।

( धर्म )

भगवान् की जो सद्वृत्तियाँ इस विश्व में फैली हुई हैं, जिनसे कि शांति आती है और धार्मिक-भावना की वृद्धि होती है और समाज समृद्ध होता है, उन भावनाओं को आगे बढ़ाने के लिए मंदिरों को केन्द्र बनाया ही जाना चाहिए।

( धर्म ) ( भगवान )

-----

**आपका विवाह हम भगवान् से कराना चाहते हैं**

अगर आप आचार्य जी का आशीर्वाद ले जाते तथा अपने जीवन को महान बना लेते, तो हम और आप दोनों धन्य हो जाते।
( स्वयं के प्रति ) ( आत्म विकास )

मित्रो! हमने शानदार जिन्दगी जी है तथा प्रसन्नता के साथ विदा होने को बैठे हैं कि हम भगवान् को सही उत्तर देंगे।
( स्वयं के प्रति )

अगर आपकी **विचारधारा** ठीक होगी और आप भगवान् का अनुदान- वरदान प्राप्त करके इस संसार का कुछ अच्छा करना चाहते हैं, तो आपको भगवान् का हर प्रकार का सहयोग मिलेगा।

( भगवान ) ( आत्म विकास )

आप भी अगर इस दुनिया के राजा, जिसका नाम भगवान् है अगर अपना सम्बन्ध उससे जोड़ लें तो आपकी कोई समस्या, कठिनाई नहीं रहेगी। आपको कोई तंग भी नहीं करेगा। आपके साथ अन्याय भी कोई नहीं कर सकता।

( भगवान ) ( आत्म- विकास )

अगर आप अपने आप को तैयार कर लें, तो सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं तथा संत, महामानव स्तर तक पहुँच सकते हैं।

( आत्म- विकास )

हमें यह महसूस करना चाहिए कि भगवान् हमारे सारे अंग- अंग में, सारे रोम- रोम में समाया हुआ है तथा उसकी शक्ति हमारे अन्दर समायी हुई है। वह हमें महान बना रहा है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ा रहा है। हमारा कायाकल्प कर रहा है। अगर इतना आप कर सकें, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप धन्य हो जाएँगे।

( आत्म- विकास )

साथियो! हमारी काया के भीतर ऐसे सेल्स भरे पड़े हैं, जिसमें हीरे- मोती सोना- जवाहरात भरे पड़े हैं। अगर आप उसे जगा लें, तो मालामाल हो सकते हैं। आप पारस, कल्पवृक्ष हो सकते हैं। आपका सम्पर्क जिस किसी से होगा, उसको आप धन्य करते चले जायेंगे। आपका विकास होता चला जाएगा।

( आत्म- विकास )

भगवान् के ऊपर पक्षपात का दोष नहीं लगाया जा सकता है। वह सबको बराबर देता है, परन्तु मनुष्य अपने गुण, कर्म, स्वभाव, श्रम, आलस्य के कारण पिछड़ जाता है। अगर आपकी पात्रता हो, तो आप सारी चीजें प्राप्त कर सकते हैं।

( भगवान ) ( आत्म- विकास )

हमने अपने गुरुदेव से एक प्रश्न पूछा कि पूज्यवर हमारी एक शंका है। आप बतलायें कि गुरुओं की खोज में लोग छुट्टी लेते हैं, मेडीकल लीव लेते हैं, घर- बार छोड़ते हैं, तब जाकर

शायद किसी कोने में कोई सच्चा गुरु मिलता है, परन्तु आप तो स्वयं हमारे पास चले आये, यह क्या बात है? पूज्यवर ने बतलाया- बेटे धरती क्या बादलों के पास जाती है या बादल स्वयं आते हैं धरती पर? हमने कहा बादल स्वयं आते हैं एवं धरती पर बरस जाते हैं। बादलों को चलना पड़ता है। बादल स्वयं बरसते रहते हैं। उन्होंने कहा कि आकाश में बादलों की तरह सिद्ध पुरुषों की भी कमी नहीं है, जो बादलों की तरह बरसने के लिए सुपात्र की खोज करते रहते हैं। दिव्य आत्माओं की वे तलाश करते रहते हैं।

( स्वयं के बारे में )

अगर वास्तव में पात्रता हो, तो ऋद्धि- सिद्धियाँ पाई जा सकती हैं तथा निहाल हुआ जा सकता है।

( आत्म- विकास )

भगवान् के यहाँ अनंत वैभव, कृपा, अनुदान भरा पड़ा है। वह केवल ऐसे आदमी को मिलता है, जिनकी पात्रता है।

( भगवान ) ( आत्म- विकास )

स्वच्छ मन, स्वस्थ- निरोग शरीर बनाने के लिए आपको यहाँ बुलाया गया है, ताकि आप भगवान से जुड़ सकें।

( स्वास्थ्य ) ( आत्म- विकास )

अगर आप इन करने वाले कर्मकाण्डों से कुछ प्रेरणा ले सकें तथा अपनी पात्रता का विकास कर सकें, अपने को जीवंत बना सकें, तो आप यकीन रखें कि आपके पास सारी ऋद्धि- सिद्धियाँ वैभव स्वतः आ जायेंगे, जिसके लिए आप रातों दिन परेशान रहते हैं।

( कर्मकांड ) ( आत्म- विकास )

हम भगवान के पास होकर आये हैं। उनके पास ढेरों हीरे की अंगूठी- जवाहरात बाल- बच्चे हैं, जिसे चाहे उठाकर ले आओ।

( स्वयं के बारे में ) ( भगवान )
------------------------

**अपने ब्राह्मण एवं सन्त को जिन्दा कीजिए**

मैंने अपने जीवन में **ब्राह्मणत्व** धारण करके देखा है और पाया है कि इसमें सफलताएँ भी हैं तथा चमत्कार भी हैं।

( ब्राम्हण ) ( स्वयं के बारे में )

ब्राह्मण उसे कहते हैं जो अपना खर्च कम से कम में चला सकता हो तथा अधिक से अधिक अपना धन, अक्ल, मेहनत, समाज में लगा सकता है, जिससे उसके जीवन का लक्ष्य, समाज का लक्ष्य पूरा होता हो।

( ब्राम्हण )

अपने **जमीन** के बाबत जो कुछ हमें मिला था, उसे गायत्री तपोभूमि के लिए दान कर दिया। मैंने अपनी पत्नी से पेशवा ब्राह्मणों की उपमा देते हुए कहा कि आपको भी यह जीवन जीना चाहिए। पेशवा के राम टांक ने अपने गुरु की पत्नी के आदेश पर सब कुछ दे दिया था। इन्होंने भी अपने सारे गहने गायत्री तपोभूमि के लिए लगा दिये। पैसों की दृष्टि से हम **खाली** हाथ हो गये, परन्तु शक्ति बहुत मिल गई।

( स्वयं के बारे में ) ( पैसा )

हमने अपने आप को तपाया है। अक्ल की दृष्टि से आदमी से ज्यादा बेईमान, बहुरूपिया कोई नहीं है। हमने अपनी अक्ल को ठीक कर लिया है। हमने अपनी हर चीज को तपाया, भीतर वाले हिस्से को भी तपाया। हमने अपने मन को, बुद्धि को तपाया है।

( स्वयं के बारे में )

पैसे से लेकर समय तक हमने केवल समाज के लिए खर्च किया। यह कसा हुआ जीवन हमारा तपस्वी का जीवन है।

( पैसा ) ( स्वयं के बारे में )

मन्त्रों में शक्ति है, गलत बात नहीं है। देवताओं में शक्ति है, यह भी गलत नहीं है, किन्तु, अगर कोई आदमी तपस्वी है तो वह हर काम को कर सकता है।

( मंत्र )

अपने अनुष्ठान काल में हमने किसी से बात नहीं की, कोई भी अन्य चीज नहीं खायी। जौ की रोटी एवं छाछ, बस यही दो चीजें हम खाते रहे।

( स्वयं के बारे में )

जिन लोगों को हम व्याख्यान देते हैं, उसे सूँघकर जब देखते हैं, चखकर के देखते हैं कि आदमी कैसा है? घटिया है या वजनदार?

( स्वयं के बारे में )

सन्त उसे कहते हैं, जिसका मन करुणा से लबालब भरा हुआ होता है।

( संत )

जब तक हम हैं तब तक हम समाज के लिए काम करते रहेंगे।

( स्वयं के बारे में ) ( समाज )

एक हमारा प्याऊ है जो कभी सूखेगा नहीं। जो पसीने से लथपथ हो गये हैं, थक गये हैं, हमारे प्याऊ पानी, हमारी तपस्या में से उनको देते रहेंगे, उन्हें हरा- भरा बनाये रखेंगे। आप सब लोग हमारे प्याऊ से पानी पी सकते हैं।

( स्वयं के बारे में )  ( भविष्यवाणी )

हमारे गुरु हम से बैखरी वाणी से नहीं बोलते, पश्यन्ति वाणी से बोलते हैं, परावाणी से बोलते हैं।

( स्वयं के बारे में )

हम जो भी सहायता आपकी कर सकते हैं, वह अवश्य करेंगे, परन्तु आपको भी स्वयं में संवेदना पैदा करनी होगी। हमने कहा है कि आप उपासना करिये, जप करिये ताकि आपको उस समय परा एवं पश्यन्ति वाणी से दिशा दे सकूँ, अन्यथा मैं अपने मौन की शक्ति प्रेषित करूँगा और आपको नुकसान होगा।

( स्वयं के बारे में ) ( साधना )

हम नहीं बोल रहे हैं, हमारा गुरु बोल रहा है। आप भी उनकी शक्ति से बोलेंगे।

( स्वयं के बारे में ) ( भविष्यवाणियां  )

प्रज्ञापुराण जब आप पढ़ेंगे और लोगों को सुनाएँगे तब वह आपकी वाणी में नहीं, बल्कि मेरे गुरु की वाणी में होगा, जिसमें अधिक ताकत होगी।

( भविष्यवाणियां  )

हम मौन हो जाएँगे तो हमारी शक्ति बढ़ जाएगी। हमारी परा एवं पश्यन्ति वाणी की ताकत बढ़ जाएगी। आप मेरी उस वाणी को सुनेंगे तो आपके आँखों में पानी आएगा, भाव- संवेदना जगेगी। इससे हम आपकी सहायता ज्यादा कर सकेंगे।

( स्वयं के बारे में ) ( भविष्यवाणियां )

हमारे मरने के बाद आप देखेंगे कि गुरुजी के मरने के बाद उनका समय, धन, श्रम किस काम में खर्च हुआ है।

( स्वयं के बारे में ) ( भविष्यवाणियां )

हमने निश्चय किया है, विचार किया है कि जिन्दगी के इन आखिरी क्षणों में अपने ब्राह्मण एवं सन्त को साधकर सबके लिए एक मिसाल स्थापित कर दूँ।

(ब्राम्हण ) ( संत ) ( स्वयं के बारे में )

मेरे गुरु ने दुखियारों की सेवा, समाज की सेवा कम की है, परन्तु उसने सारे विश्व को हिला दिया है। दूसरों के दुःखों को देखकर यह सोचते हैं कि इसके लिए हम क्या करें? उस **समय मैं रो पड़ता**हूँ तथा उसे सहायता किये बिना मेरा मन नहीं मानता है। यह क्रम चलेगा ही।

( समाज ) ( स्वयं के बारे में )

इनसान को उठाया नहीं जा सका तो बात कैसे बनेगी?

( आत्म-विकास )

सुन लेना एक दिन मैं पूजा को गालियाँ दूँगा, यदि यही रटता रहा कि सब कुछ पूजा से मिल जाएगा और यही समझता रहा कि माला घुमाने को पूजा कहते हैं। देवी- देवता को पकड़ने का नाम पूजा है। अज्ञानी लोग, भ्रमित लोग मनुष्य को दबाने तथा चक्कर में डालने के नाम को पूजा कहते हैं। देवी- देवताओं को पकड़ने के लिए, मनोकामना पूर्ण करने के लिए जो आपने पूजा का स्वरूप बना रखा है, वह बहुत ही घटिया रूप है।

( कर्मकांड ) ( कुरीतियां )

अब तो मैं यहाँ तक कहता हूँ कि अब माला जप करें या न करें, एक माला जप करें या ८१ माला जप करें, परन्तु मुख्य बात यह है कि आप अपने ब्राह्मणत्व को जगाइए।

( ब्राम्हण ) ( आत्म-विकास )

आप अकेले चलें। हमारे गुरु अकेले चले हैं। हम अकेले चले हैं। आप भी अकेले चलिये।

( आत्म-विकास )

आप आदमी तो बनें पहले। आप आदमी बनना सीखें। आप घटियापन छोड़िये, सुबह से शाम तक काम कीजिये। पात्रता बढ़ाइये।

( आत्म-विकास )

ऋषियों ने अपने रक्त को एक घड़े में भरा था, जिससे सीताजी उत्पन्न हुई थीं। आपको भी संस्कृति की सीता की खोज करनी है। समाज के लिए, संस्कृति के लिए आप भी अपना समय, अपना पैसा निकालिये, **अपना रक्त** निकालिये। आप अपने आप को निचोड़िये तो सही।

( आत्म-विकास ) ( समाज ) ( सभ्यता - संस्कृति )

अगर आपने अपने आपको निचोड़ दिया तो हमारा एक काम जरूर करना और वह यह कि हमारे विचार- हमारी आग को लोगों तक पहुँचाना। हम लेखक नहीं हैं। हमारे लिखे शब्दों में से आग निकलती है। विचारों की आग, **भावनाओं** की- क्रान्ति की आग निकलती है। आज जनता भी प्यासी, हम भी प्यासे हैं। हमारी विचारधारा ही आग है। हम आग उगलते हैं। हम लेखक नहीं हैं। हमारे लेखनी में से निकलती है आग, मस्तिष्क में से निकलती है आग, हमारी आँखों में से निकलती है आग। हमारे विचारणा की आग, भावनाओं की आग, संवेदनाओं की आग को आप घर- घर पहुँचाइये।

( स्वयं के बारे में ) ( युगशिल्पियों के प्रति )

हमारी आग को बिखेर दीजिये, **वातावरण** को गरम कर दीजिये, उससे अज्ञानता को जला दीजिये।

( युगशिल्पियों के प्रति )

आज आप लोगों से एक ही निवेदन कि आप हमारी आग स्वयं बिखेरिए, नौकरी से नहीं, सेवा से। आप जाइये एवं हमारा साहित्य पढ़िए तथा लोगों को पढ़ाइए|

( युगशिल्पियों के प्रति )

मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि मनोकामना की मालाएँ, जादूगरी की माला में आग लगा दीजिये, आप मनोकामना की माला, जादूगरी की माला, आज्ञाचक्र जाग्रत करने की माला को पानी में बहा दीजिये।

( कर्मकांड )

आपके पास धन नहीं तो अपनी भावना, विचार, श्रद्धा तो समाज में बिखेर ही सकते हैं। वही बिखेरिए, सन्त बनकर अपना परिचय दीजिये।

( पैसा ) (संत ) ( सेवा ) ( युगशिल्पियों के प्रति )

आपके श्रम, समय, धन और विचारणा- भावना की समाज को जरूरत है, संस्कृति को जरूरत है। इसे विलासिता में खर्च मत कीजिये।

( युगशिल्पियों के प्रति ) ( समाज )

आप हनुमान जी या सन्तोषी माता को साधते हैं। अरे पहले अपने आपको तो साधिये न, पर यह जो जादूगरी आप करते हैं, वह बदमाशी के सिवा कुछ नहीं है।

( युगशिल्पियों के प्रति ) ( कुरीतियां )

मित्रों, गुरुजी ने हमेशा दिया है, आगे भी देते रहेंगे, शर्त एक ही है कि आप अपनी ब्राह्मण तथा सन्त की प्रवृत्ति जिन्दा करें।

( स्वयं के बारे में ) ( युगशिल्पियों के प्रति ) ( ब्राम्हण ) ( संत)

**भाव-संवेदना का विकास करना ही साधुता**

**मेरे प्यारे बच्चों ,** हमारे तुम सबके बीच आने का एक ही उद्देश्य है कि हम समाज को सही व्यक्ति देकर जाएँ। व्यक्ति होते तो यह सारा समाज नया हो जाता। सारे समाज का कायाकल्प हो जाता।

( स्वयं के बारे में ) (समाज )

यदि काम के इनसान होते तो जमीन पलट दी गई होती। तुम सब यहाँ आए हो तो काम के आदमी बन जाओ।

(आत्म-विकास )

हमने जीवन भर व्यक्ति के मर्म को छुआ है व अपना ब्राह्मण स्वरूप खोलकर रख दिया है। नतीजा यह कि हमारे साथ अनगिनत आदमी जुड़े।

( स्वयं के बारे में ) ( ब्राम्हण )

तुम यदि सही अर्थों में जुड़े हो तो अपना भीतर वाला हिस्सा भी लोकसेवी का बना लो व समाज के लिए कुछ कर डालने का संकल्प ले डालो।

( सेवा ) ( युगशिल्पियों के प्रति )

हमने वसन्त पर्व पर अपने भगवान से दीक्षा ली थी। यह कहा था कि अब 'मैं' समाप्त होता हूँ व 'आप' जीवित होते हैं। आपकी इच्छा प्रमुख मेरी इच्छा गौण। समर्पण किया था हमने।

( स्वयं के बारे में )

बस कसौटी एक ही **'अहं'** को गलाना, विसर्जन, समर्पण। जब तक अहंकार जिन्दा है, आदमी दो कौड़ी का है। जिस दिन यह मिट जाएगा आदमी बेशकीमती हो जाएगा।

( अहंकार ) ( आत्म - विकास )

'अहं' ही है, जिसके कारण न सिद्धान्त, न सेवा, न आदर्श आ पाते हैं। व्यक्ति लोकसेवा के क्षेत्र में प्रवेश करके भी उच्छृंखल स्तर का अनगढ़ बना रहता है।

( अहंकार ) ( आत्म - विकास )

व्यक्ति को पहचानने की एक ही कसौटी है कि उसकी वाणी घटिया है या बढ़िया।

( व्यक्तिव )

वाणी ही व्यक्ति का स्तर बताती है। व्यक्तित्व बनाने के लिए वाणी की विनम्रता जरूरी है। प्याज खाने वाले के मुँह से, शराब पीने वाले मसूड़े के मुँह से जो बदबू आती है, वाणी की कठोरता ठीक इसी प्रकार मुँह से निकलती है। अशिष्टता छिप नहीं सकती। यह वाणी से पता चल ही जाती है।

( व्यक्तित्व )

अनगढ़ता मिटाओ, दूसरों का सम्मान करना सीखो।  व्यक्ति के अच्छे गुण देखो, उनका सम्मान करना सीखो। तुरन्त तुम्हें परिणाम मिलना चालू हो जाएँगे।

( आत्म-विकास )

दूसरों की अच्छाइयों की तारीफ करना, मीठी बोलना एक ऐसा सद्गुण है, जो व्यक्ति को चुम्बक की तरह खींचता व अपना बनाता है। दूसरे सभी तुम्हारे अपने बन जाएँगे, यदि तुम यह गुण अपने अन्दर पैदा कर लो। इसके लिए अन्तः के अहंकार को गलाओ।

( अहंकार ) ( आत्म-विकास )

अपनी इच्छा, बड़प्पन, कामना, स्वाभिमान को गलाने का नाम समर्पण है, जिसे तुमसे करने को मैंने कहा है व इसकी अनन्त फलश्रुतियाँ सुनाई हैं|

( आत्म - विकास )

हमारी एक ही महत्त्वाकाँक्षा है कि हम सहस्रभुजा वाले सहस्रशीर्षा पुरुष बनना चाहते हैं। तुम सब हमारी भुजा बन जाओ, हमारे अंग बन जाओ, यह हमारी मन की बात है। गुरु- शिष्य एक- दूसरे से अपने मन की बात कहकर हल्के हो जाते हैं। हमने अपने मन की बात तुमसे कह दी। अब तुम पर निर्भर है कि तुम कितना हमारे बनते हो?

( स्वयं के बारे में )  ( युगशिल्पियों के प्रति )

जिसका अहं जिन्दा है, वह वेश्या है। जिसका अहं मिट गया, वह पवित्रता है।

( अहंकार )

**निरहंकारी** का प्रथम चिह्न है वाणी की मिठास। वाणी व्यक्तित्व का हथियार है। यदि वाणी सही है तो तुम्हारा व्यक्तित्व जीवन्त हो जाएगा, बोलने लगेगा व सामने वाले को अपना बना लेगा।

( अहंकार ) ( व्यक्तित्व )

अपनी विनम्रता, दूसरों का सम्मान व बोलने में मिठास, यही व्यक्तित्व के प्रमुख हथियार हैं। इनका सही उपयोग करोगे तो व्यक्तित्व वजनदार बनेगा।

( व्यक्तित्व ) ( आत्म- विकास )

श्रेष्ठ कार्यकर्ता श्रेष्ठ 'डाई' बनता है। तुम सबसे अपेक्षा है कि अपने गुरु की तरह एक श्रेष्ठ साँचा बनोगे।

( युगशिल्पियों के प्रति )

तुमसे दो और अपेक्षाएँ हैं- एक श्रम का सम्मान। यह भौतिक जगत का देवता है। मोती- हीरे श्रम से ही निकलते हैं। दूसरी अपेक्षा यह कि सेवा- बुद्धि के विकास के लिए सहकारिता का अभ्यास। संगठन शक्ति सहकारिता से ही पहले भी बढ़ी है, आगे भी इसी से बढ़ेगी।

( युगशिल्पियों के प्रति )

हमारे राष्ट्र का दुर्भाग्य यह है कि श्रम की महत्ता हमने समझी नहीं। श्रम का माद्दा इस सबमें असीम है।

( भारत ) ( श्रम )

हमारा जीवन निरन्तर श्रम का ही परिणाम है। **बीस- बीस** घण्टे तन्मयतापूर्वक श्रम हमने किया है। तुम भी कभी श्रम की उपेक्षा मत करना।

( श्रम ) (स्वयं के प्रति )

अपना मन सभी से मिलाओ। मिल- जुलकर रहना, अपना सुख बाँटना, दुःख बँटाना सीखो। यही सही अर्थों में ब्राह्मणत्व की साधना है।

( ब्राम्हण )

सेवाबुद्धि का, दूसरों के प्रति पीड़ा का, भाव- सम्वेदना का विकास करना ही साधुता को जगाना है।

( संत )

यही आत्मा की हमारी वाणी है, जो तुमसे कुछ कराना चाहती है, इतिहास में तुम्हें अमर देखना चाहती है। देखना है कितना तुम हमारी बात को जीवन में उतार पाते हो।

( युगशिल्पियों के प्रति )

**त्याग-बलिदान की संस्कृति - देवसंस्कृति**

**जून १९७३**

जो व्यक्ति सत्य का हिमायती हुआ, वह कभी छोटा नहीं हुआ। सत्य का हिमायती हमेशा बलवान् रहा है और जोरदार रहा है।

( व्यक्तित्व )

कोई श्रेष्ठ परंपरा स्थापित करने के लिए व्यक्तिगत जीवन का आदर्श उपस्थित किए बिना दुनिया इधर- उधर नहीं हो पाएगी। कथा, व्याख्यान, सत्संग आदि सब खेल- खिलौने हैं।

( व्यक्तित्व )

दैवीय संस्कृति वह है, जो त्याग के लिए, बलिदान के लिए प्रोत्साहन देती है और आगे बढ़ाती है और दैत्यों की सभ्यता, राक्षसों की सभ्यता वह है, जो न स्वयं श्रेष्ठ काम करते हैं और न किसी को करने देते हैं।

( सभ्यता - संस्कृति )

दानवी सभ्यता, जिसने कि हमारे सारे- के मानव समाज को बुरे तरीके से जकड़ रखा है, इसको मारने के लिए वो तत्त्व काफी नहीं है, जिनको राजनीति वाले हथियारों के रूप में प्रयोग करना चाहते हैं।

( सभ्यता - संस्कृति )

दैवीय सभ्यता का एक ही स्वरूप है कि हम व्यक्तिगत जीवन में कठिनाइयाँ उठाएँ। किसके लिए? सारे समाज के लिए, धर्म के लिए और संस्कृति के लिए। हम इनके संवर्द्धन के लिए कष्ट उठाएँ और इन्हें आगे बढ़ाएँ। दैवीय सभ्यता इसी का नाम है। बस न इससे कम और न ज्यादा। देवताओं का स्वरूप यही है।

( सभ्यता - संस्कृति )

जब मनुष्य- जाति के लिए मुसीबतें आई हों, भविष्य के लिए आशंका आई हो कि हमारा भविष्य अंधकारमय होने वाला है, जैसा कि आज हमको दिखाई पड़ता है, तो क्या करना पड़ेगा? उपाय एक ही है, दूसरा कोई उपाय नहीं है। अब हमको दैवीय सभ्यता का ढाँचा खड़ा करना पड़ेगा, नमूना खड़ा करना पड़ेगा।

( सभ्यता - संस्कृति )

देवता का मन वह होता है कि जब उसके जीवन में कोई त्याग करने, बलिदान करने का मौका आता है, तो बल्लियों उछलने लगता है।

( व्यक्तिव )

राक्षसों का दिल कैसा होता है? राक्षसों का, चोरों का, घटिया आदमी का दिल यह है कि जब त्याग का वक्त आता है, तो वह थर–थर काँपने लगता है।

( व्यक्तिव )

कामना- ही कामना- ही जिसके अंदर भरी हुई है, बेटे यह कोई अध्यात्म नहीं है।ठीक है मित्रो! यह बच्चों का अध्यात्म रहा होगा।

( अध्यात्म )

अध्यात्म को हम भौतिक चीजों को पाने के लिए इस्तेमाल करते हैं, इसलिए बेटे, मैं इसको जूठन का पत्ता कहता हूँ।

( अध्यात्म )

मित्रो! अध्यात्म की प्राचीन परंपराएँ, शालीन परंपराएँ, महान् परंपराएँ भगवान् को अपनी ओर खींचती हैं और खींचने के अलावा दूसरों की सहायता करने में समर्थ होती हैं। ऐसा कोई अध्यात्म नहीं है, जो मनोकामना को प्राप्त कराता है। अध्यात्म वह है, जिससे आदमी अपना कल्याण करते हैं और दूसरों का कल्याण करने में समर्थ होते हैं। ऐसी शक्ति, जो दूसरों का कल्याण करती है, वह केवल असली अध्यात्म में रहती है ।

( अध्यात्म )

जिसमें त्याग जुड़ा हुआ न हो, सेवा जुड़ी हुई न हो, लोकहित जुड़ा हुआ न हो, कष्ट सहने की बात जुड़ी हुई न हो, उसमें अध्यात्म कैसे हो सकता है? नहीं बेटे! इससे कम में अध्यात्म न था और न कभी होगा।

( अध्यात्म )

सौभाग्यशाली वे हैं, वंदनीय वे हैं, जिन्होंने अपना आचरण इस तरीके से पेश किया कि जिससे प्रेरित होकर हजारों आदमी नमूने पेश करते रहें और दिशा प्राप्त करते रहें।

( प्रतिभा - विभूतियाँ )

भारतीय सभ्यता को अपने अनुदान देने वाले लोगों का जब मैं इतिहास पढ़ता हूँ, तो आँखों में से आँसू टपक पड़ते हैं।

( भारत )

भारत के गौरव को ऊँचा उठाने के लिए, सारे विश्व का कायाकल्प कर डालने के लिए, जो आधारभूत मंत्र था, वह था त्याग और बलिदान।

( भारत ) ( त्याग )

दूसरों को कह सकता है कि आपको त्यागी होना चाहिए, ब्रह्मचारी रहना चाहिए, परोपकारी होना चाहिए। आप और हम कह सकते हैं, लेकिन जब स्वयं करने का मौका आएगा, तब हम नहीं कर सकते। यही कारण है कि वक्ताओं का, उपदेशकों का कहीं कोई प्रभाव पड़ता नहीं दिखाई देता।

( त्याग ) ( व्यक्तित्व )

हमारी परंपरा स्वयं से शुरुआत करने की रही है। जहाँ कहीं भी हम देखते हैं, अपने से ही शुरुआत देखते हैं।

( स्वयं के बारे में )

अगर हमारे व्यक्तिगत जीवन में लोकहित के लिए, परमार्थ के लिए कहीं त्याग की परंपरा नहीं है, तो फिर कहने भर की बातें हैं, बरगलाने भर की बातें हैं और आपको छलने एवं जनता को बरगलाने की बातें हैं।

(  व्यक्तित्व )

**हमारा कुटुम्ब, तब और अब**

जहाँ कहीं भी वास्तविकता का उदय हुआ है, जहाँ कहीं भी जवानी आई है, जहाँ कहीं भी प्रौढ़ता आई है, जहाँ कहीं भी विवेकशीलता आई है, वहीं परंपरा पलट जाती है।

( परंपरा )

आज मनुष्य जाति जहाँ चली जा रही है, आदमी का चिंतन जिस गहराई के गड्ढे में धँसता हुआ चला जा रहा है, ये ठीक वही परंपराएँ हैं, जो कि रावण के जमाने में आई थीं। इसमें वह मनुष्यों को मारकर हड्डियों का ढेर लगा देता था

( परिवार )

आज हम देखते हैं कि न हमको अपनी बीबी के प्रति दया है, न अपने माँ- बाप के प्रति दया है, न अपने बच्चों के प्रति दया है। रोज बच्चे पैदा कर लेते हैं। इस बात की लिहाज- शर्म नहीं है कि आखिर इनको पढ़ाएगा कौन? शिक्षा के लिए पैसा कहाँ से आएगा? हमको तो बस काम- वासना से प्यार है। हम तो चौरासी बच्चे पैदा करेंगे। आज आदमी चांडाल होता हुआ चला जा रहा है।

( परिवार )

अगर आदमी इसी तरीके से बना रहा, तो उसका परिणाम क्या होगा? अभी जितनी ज्यादा मुसीबतें आई हैं, आगे उससे भी ज्यादा आएँगी। आदमी, जैसा निष्ठुर, जैसा नीच, जैसा स्वार्थी होता हुआ चला जा रहा है, अगर यही क्रम जारी रहा, तो मैं आपसे कहे देता हूँ कि आदमी- आदमी को मार करके खाएगा।

( भविष्यवाणियाँ - चेतावनियां )

मित्रो! लोकहित के लिए हमारे मन खाली होते चले गए। उदारता हमारे मन में से निकलती चली जा रही है और निष्ठुरता हमारे रोम- रोम में घुसती चली जा रही है। परिणाम क्या होगा? आप देख लेना, इसका परिणाम बहुत भयंकर होगा। आदमी का चिंतन जैसा और जितना घटिया होगा, मुसीबतें उसी हिसाब से आएँगी

( भविष्यवाणियाँ - चेतावनियां )

मित्रो! आदमी की जो घटिया वृत्तियाँ हैं, वे न केवल आदमी के शरीर को, वरन् उसके ईमान को और अंतःकरण को गलाती और जलाती चली जाएँगी। घर नरक बनते चलते जाएँगे।

( भविष्यवाणियाँ - चेतावनियां )

**शिक्षा** की दृष्टि से, धन की दृष्टि से, अमुक की दृष्टि से, सब तरह से आदमी संपन्न होता चला जा रहा है, लेकिन ईमान की दृष्टि से, अंतरंग की दृष्टि से इतना खोखला होता चला जा रहा है कि उसके ऊपर मुसीबतें आएँगी। नेचर हमारे ऊपर मुसीबतें पटक देगी। वह हमें क्षमा करने वाली नहीं है।

( भविष्यवाणियाँ - चेतावनियां )

अगर आप अपने मन, अपने हृदय और अपने श्रम की बूँदें लगा सकते हों, तो इस परीक्षा की घड़ी में आपका आना जीवन धन्य बनाने के लिए पर्याप्त है।

( समय )

मित्रो! हमारा ख्वाब और हमारा सपना पूरा होकर के रहा। गायत्री तपोभूमि जो बनी है, वह उससे तीन- चार साल पहले छपे हुए गायत्री तपोभूमि के चित्र से हू- बहू मिलती हुई बनाई गई है हमारे सपने युग को बदलेंगे, नया जमाना लाएँगे। दैवीय सभ्यता और दैवीय संपदा की फिर से स्थापना करेंगे।

( भविष्यवाणियाँ - चेतावनियां )

हम असुरता को चैलेंज करेंगे। क्यों? क्योंकि हम मनुष्यता से प्यार करते हैं, क्योंकि हम मानवी भविष्य को उज्ज्वल बनाना चाहते हैं, क्योंकि हमको अपनी नई पीढ़ियों के बारे में बड़ी उमंग है। हम अपनी नई पीढ़ियों को बहुत प्यार करते हैं। जिन मुसीबतों से हम गुजर रहे हैं, अपनी नई पीढ़ियों को गुजरवाना नहीं चाहते, क्योंकि हम बच्चों को बहुत प्यार करते हैं।

( स्वयं के बारे में )

दैवीय सभ्यता जिसका अर्थ भजन करना नहीं होता, वरन् जीवन को दैवीय सभ्यता के अनुरूप ढाल लेना होता है।

( सभ्यता - संस्कृति )

हमने जो कार्यक्रम बनाए हैं, सब एक उद्देश्य से बनाए हैं। वह सब इसलिए बनाए हैं कि हममें से कोई भी आदमी निष्क्रिय न रहने पाए। हर एक से कहा है कि अगर आपके अंदर निष्क्रियता है, तो उसे दूर कीजिए और अपने अंदर सक्रियता का विकास कीजिए। अपने युग निर्माण परिवार के हर सदस्य को हम सक्रिय देखना चाहते हैं।

( युगशिल्पियों के प्रति )

आप एक घंटा समय नहीं दे सकते? दो घंटे समय नहीं दे सकते? कलेजा है आप में? हृदय है आप में? हिम्मत है आप में? जीवन है आप में? निष्ठा है आप में? श्रद्धा है आप में? अगर ये नहीं हैं, तो बहाने मत बनाइए |

( समय )

मिशन से मतलब 'नया युग' से है। मिशन से मतलब मानवी सभ्यता, मानवी भविष्य।

( युगशिल्पियों के प्रति )

अध्यात्म की किरणें जब भी आई हैं, तो देवत्व को आसुरी सभ्यता खिलाफ खड़ा होना पड़ा है।

( अध्यात्म ) ( सभ्यता - संस्कृति )

हमारे अंदर जब गायत्री मंत्र आया, तो साथ में देवत्व भी आया। देवत्व और गायत्री मंत्र दोनों ने मिलकर के चमत्कार दिखाया।

( स्वयं के बारे में )

आप चाहें, तो समय दिए बिना अपने स्थानीय क्षेत्र में घर में रहकर एक काम यह भी कर सकते हैं कि आप जन्मदिन मनाने की परंपरा को जीवंत करने के लिए समय लगा सकते हैं। घर- घर में गोष्ठियाँ, घर- घर में सभा, घर- घर में सम्मेलन हर जन्मदिन के माध्यम से फिर से शुरू कर सकते हैं।

( परिवार ) ( युगशिल्पियों के प्रति )

अगर आप जन्मदिन मनाने की परंपरा को फिर से फैला सकें, तो आप देखेंगे कि ये मिशन, जिसमें देवत्व के पुनर्जीवन का संकल्प छिपा हुआ है, उसको जिंदा करने के लिए आप क्या कर सकते हैं।

( परिवार ) ( युगशिल्पियों के प्रति )

हमारे आचार्य कैसे होने चाहिए? उनका रहन- सहन उनकी बोल- चाल उनका व्यवहार, उनका आचरण, उनका उठना- बैठना उनका खान- पान बिलकुल ऐसा होना चाहिए, जैसा कि हमारा है।

( प्रतिभा - विभूतियाँ )

**स्वयं को ऊँचा उठायें - व्यक्तित्ववान बनें**

आप स्वयं ज्वलंत दीपक के तरीके से अगर बनने में समर्थ हो सकें, तो हमारी वह सारी- की आकांक्षा और मनोकामना और महत्त्वाकाँक्षाएँ पूरी हो जाएँगी, जिसको लेकर के हम चले हैं और यह मिशन चलाया है |

( युगशिल्पियों के प्रति )

मित्रो! हमको जो सबसे महत्त्वपूर्ण काम मानकर चलना है, वह यह कि हमारा व्यक्तित्व किस प्रकार का हो? न केवल हमारे विचारों का वरन, हमारे क्रिया- कलापों का भी।
( व्यक्तित्व ) ( आत्म-विकास )

हमको जो कोई भी कार्य करना है, जो कोई भी सहायता प्राप्त करनी है, वह रामायण के माध्यम से नहीं, गीता के माध्यम से नहीं, व्याख्यानों के माध्यम से नहीं, प्रवचनों के माध्यम से नहीं, यज्ञों के माध्यम से नहीं पूरा होने वाला है। अगर किसी तरह से हमारे मिशन को सफलता मिलनी है और वह उद्देश्य पूरा होना है तो आपका चरित्र- आपका व्यक्तित्व ही एक मार्ग है, एक हथियार है हमारा।

( व्यक्तित्व ) ( युगशिल्पियों के प्रति )

हमको जनता के विचारों का संशोधन और विचारों का संवर्द्धन करने के लिए व्याख्यान करने पड़ेंगे और लोकशिक्षण करना पड़ेगा, क्योंकि आज मनुष्य के विचार करने की शैली में सबसे ज्यादा गलती है।

( युगशिल्पियों के प्रति )

बाकी जो मुसीबतें हैं, परेशानियाँ हैं, वे तो बर्दाश्त की जा सकती हैं, लेकिन आदमी के सोचने का तरीका अगर गलत बना रहा तो एक भी गुत्थी हल नहीं हो सकती और सारी गुत्थियाँ उलझती चली जाएँगी।

( दृष्टिकोण )

हमको जनसाधारण के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण सेवा जो है, वह यह करनी पड़ेगी कि उनके विचार करने की शैली, सोचने की शैली को बदल देना पड़ेगा। अगर हम सोचने के तरीके को बदल देंगे, तो उनकी कोई भी समस्या ऐसी नहीं है, जिसका समाधान न हो सके।

( दृष्टिकोण ) ( युगशिल्पियों के प्रति )

सारी समस्याओं का निदान, समाधान जरूर हो जाएगा, यदि आदमी इस बात पर विश्वास कर ले कि आहार और विहार, खान और पान, संयम और नियम, ब्रह्मचर्य, इनका पालन कर लेना आवश्यक है तो मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि अस्पताल को खोले बिना, डाक्टरों को बुलाए बिना, इन्जेक्शन लगवाए बिना और अच्छी कीमती खुराक का इन्तजाम किए बिना हम सारे समाज को निरोग बना सकते हैं।

( स्वास्थ्य ) (परिवार )

परिवारों की समस्याओं का समाधान जब कभी भी होगा, तो प्यार से होगा, मोहब्बत से होगा, ईमानदारी से होगा, वफादारी से होगा। इसके बिना हमारे कुटुम्ब दो कौड़ी के हो जाएँगे और उनका सत्यानाश हो जाएगा।

( परिवार ) ( भविष्यवाणियाँ - चेतावनियां ) ( समाज )

हमको प्रत्येक स्त्री और पुरुष को यही सिखाने की जरूरत है कि हमको मेहनती और परिश्रमशील होना चाहिए। परिश्रमशील होने का माद्दा अगर लोगों के दिमागों में हम स्थापित कर सकें, तो मित्रो हमारे घरों की समस्याएँ, परिवारों की समस्याएँ, समाज की समस्याएँ और सारी समस्याएँ जैसे बेईमानी की समस्याएँ आदि कोई समस्या ऐसी नहीं है, जिसका हम समाधान न कर सकते हों।

( श्रम ) ( समाज )

आपको यह करना पड़ेगा कि जहाँ कहीं भी आप जाएँ, जिस शाखा में भी आप जाएँ, एक छाप इस तरह की छोड़कर आएँ कि गुरुजी के संदेश वाहक और गुरुजी के शिष्य जो होते हैं, वे किस तरह से और क्या कर सकते हैं और क्या करना चाहिए। आप यहाँ से जाना और वहाँ इस तरीके से अपना गुजारा करना, इस तरीके से निर्वाह करना जैसा कि संतों का गुजारा होता है और संतों का निर्वाह होता है।

( युगशिल्पियों के प्रति )

आपको किसी चीज की जरूरत पड़ती हो, चाहे आपको दिन भर भोजन न मिला हो, तो आप अपने झोले में सत्तू लेकर के जाना, थोड़ा नमक ले करके जाना। छुपकर के अपने कमरे में अपना सत्तू और अपना नमक घोल करके पी जाना , लेकिन जिन लोगों ने आपको बुलाया है, उन पर ये छाप छोड़ करके मत आना कि आप चटोरे आदमी हैं और आप इस तरह के आदमी हैं कि आप खाने के लिए और पीने के लिए और अमुक चीजों के लिए आप फरमाइश ले करके आते हैं।

( युगशिल्पियों के प्रति )

सच में बड़ा मिठास होता है। उसमें बड़ी मोहब्बत होती है

( सत्य )

प्यार अगर आपकी जबान में से निकलता नहीं और मिठास आपकी जबान में से निकलती नहीं है, आप निष्ठुर की तरह जबान की नोंक में से बिच्छू के डंक के तरीके से मारते रहते हैं, दूसरों को चोट पहुँचाते रहते हैं और दूसरों का अपमान करते रहते हैं और विचलित करते रहते हैं, तब आपको यह कहने का अधिकार नहीं है कि आप सच बोलते हैं।

( सत्य ) ( प्रेम )

सच क्या है? जैसा आपने देखा है, सुना है, उसको ही कह देने का नाम सच नहीं है। सच उस चीज का भी नाम है, जिसके साथ में प्यार भरा हुआ रहता है और मोहब्बत जुड़ी हुई रहती है।

( सत्य ) ( प्रेम )

जो आदमी अपने मुँह से, अपनी जबान से, अपने बड़प्पन की जितनी बात बताता है, वह उतना ही कमजोर होता चला जाता है और उतनी ही उसकी महत्ता कम होती जाती है।

( व्यक्तिव )

यहाँ आपने कितना भजन किया या नहीं किया, आप जानें, आपका काम जाने, पर वहाँ जहाँ कही भी हम भेजते हैं, हम इसलिए भेजते हैं कि हर आदमी को हम उपासक बनाएँगे और गायत्री की उपासना सिखाएँगे और निष्ठा करना सिखाएँगे।

( युगशिल्पियों के प्रति )

मित्रो! लोगों की निष्ठाएँ ब्राह्मण के प्रति कम हो गई हैं और जो रही बची हैं, वह और खत्म हो जाएँगी। लोगों की निष्ठाएँ साधु पर से भी खत्म हो गई हैं और जो रही- सही बची हैं, तो और खत्म हो जाएँगी।

( ब्राम्हण और ब्राम्हणत्व ) ( संत )

लोगों में पंडितों के प्रति, संतों के प्रति, साधुओं के प्रति, हरेक के प्रति अवज्ञा का भाव उत्पन्न हो गया है और वे भाव हमने पैदा किये हैं। हम पुनः आस्था की स्थापना करेंगे। साधु के गौरव को हम फिर जिन्दा करेंगे, ब्राह्मण के गौरव को हम फिर जिन्दा करेंगे कि साधु और ब्राह्मण अपनी जिन्दगी किस तरीके से खपा देते थे। समाज के लिए, समाज को ऊँचा उठाने के लिए और धर्म की ऊँचा उठाने के लिए। ऋषियों की निष्ठा को ऊँचा उठाने के लिए किस तरह से वे अपने आपके लिए तबाही मोल लेते थे और किस तरीके से गरीबी मोल लेते थे? कि तरीके से कष्ट उठाते थे? इसे हमको जिन्दा करना है।

( ब्राम्हण और ब्राम्हणत्व ) ( संत ) ( युगशिल्पियों के प्रति )

गाली आपको पड़नी चाहिए; क्योंकि लोगों ने इस तरीके से हमारे धर्म को, अध्यात्म को और भगवान को, ईश्वर को और सन्तवाद को बदनाम किया है। उसका प्रायश्चित हमें तो करना पड़ेगा ही। आखिर उनके वंश के तो हमीं लोग हैं ना?

( कुरीतियां )

ऋषियों के गौरव, ऋषियों के यश का लाभ हमीं लोग तो उठा सकते हैं। तो फिर हमारे जो मध्यकाल में ऋषि हुए हैं, उनके बदले की गाली कौन उठाएगा?

( युगशिल्पियों के प्रति )

युग निर्माण के आदमी कौन? जो संतों की परम्परा को जिन्दा रखने के लिए कमर बाँधकर खड़े हो गये, जो ब्राह्मण की परम्परा को जिन्दा रखने के लिए कमर कसकर खड़े हो गये हैं। जिन्होंने जीवन का यह व्रत लिया है कि हम श्रेष्ठ व्यक्तियों के तरीके से भले मनुष्यों के तरीके से- शरीफ आदमियों के तरीके से और अध्यात्मवादियों के तरीके से जिन्दगी यापन करेंगे

( युगशिल्पियों के प्रति )

अच्छे काम के लिए, अच्छा काम करने के लिए शरम की जरूरत नहीं है। आपको खराब काम, बुरे काम करने की जरूरत हो, तो बात अलग है।

( कर्मयोग )

हमारे क्रिया- कलाप और हमारे वस्त्र- दोनों का तालमेल मिला करके जब हम कार्यक्षेत्र में चलने के लिए तैयार होंगे, तो फिर क्यों हम उन परम्पराओं को जाग्रत करने में- जीवित करने में समर्थ न होंगे? जिसको ऋषियों ने हजारों और लाखों के खून से सींचकर के बनाया था, उसको जिन्दा रखा था।

( कर्मयोग )

एक बात तो पैसे के बारे में है। उससे अपने हाथ बिलकुल साफ रखना। जहाँ कहीं भी आपको पैसे चढ़ाने का मौका आए, आरती का मौका आए, पूजा का मौका आए, कोई भी पैसा आता हो, वहाँ आप लेना मत।

( युगशिल्पियों के प्रति ) ( पैसा )

आपको हमने संत बनाया है, लेकिन दान- दक्षिणा का पैसा वसूल करने का अधिकारी नहीं बनाया है।

( युगशिल्पियों के प्रति ) ( पैसा )

उस आदमी को दान- दक्षिणा लेने का अधिकार है, जिसने सारा जीवन समाज के लिए समर्पित कर दिया है और अपने घर की सम्पदा को पहले खत्म कर दिया है और अपने घर की सम्पदा के नाम पर उसके पास कोई पैसा जमा नहीं है।

( संत ) ( युगशिल्पियों के प्रति ) ( पैसा )

जमीन जब तक हमारी थी, हमें क्या हक था कि हम अस्सी बीघे जमीन से अपना गुजारा न करें और गायत्री तपोभूमि के पैसे से हम कपड़े पहनें और रोटी लें। लोगों ने हमको धोतियाँ दीं, कपड़े हमको दिए और कहा कि गुरुजी के लिए लाए हैं। गुरु- दक्षिणा में लाए हैं। आपके लाने के लिए बहुत धन्यवाद, बहुत एहसान। सारे के सारे बक्से में बन्द करते चले गये। सारे कपड़ों को तपोभूमि में भिजवा दिया। जहाँ कार्यकर्ता रहते थे, दूसरे लोग रहते थे, हरेक को हमने दे दिया।

( स्वयं के बारे में ) ( पैसा )

जब तक हम गायत्री तपोभूमि में रहे हमने रोटी नहीं खाई, लेकिन जब हम अपनी अस्सी बीघे जमीन दे करके और भी हमारे पास जो कुछ था, दे करके खाली हाथ हो करके आ गये, हम अपना केवल शरीर और वजन ले करके आ गये, तो हमने यह मंजूर कर लिया है और हम यहाँ शान्तिकुञ्ज के चौके में रोटी खाते हैं और कपड़े पहनते हैं।

( स्वयं के बारे में ) ( पैसा )

मित्रो! दान- दक्षिणा की, रोटी खाने का और कपड़े पहनने का अधिकार सिर्फ उस आदमी को है, जिसने अपनी व्यक्तिगत सम्पदा को समाप्त कर दिया है।

( पैसा )

पैसे के मामले में कहीं आप यह करके मत आना कि लोग आपके बारे में ये कहने लगें कि गुरुजी के चेले पैसे के बारे में चोरी का भाव लेकर के आते हैं, भिक्षा माँगने का भाव लेकर आते हैं। यह ख्याल ले करके मत आना। यह बदनामी है आपकी, हमारी और हमारे मिशन की।

( युगशिल्पियों के प्रति ) ( पैसा )

आँखें नीची रख करके महिलाओं से आप भी बातें करें। आपको भी यही शिक्षा दी जाती है। आपको भी ये शिक्षा दी जाती है कि महिला समाज में जहाँ कहीं भी आपको रहना पड़े, आँख से आँख मिलाइए मत, आँखें नीची करके बात कीजिए। नीचे आँख करके बात करेंगे, तो आपका गौरव, आपका सम्मान, आपकी इज्जत बराबर बनी रहेगी।

( युगशिल्पियों के प्रति ) ( व्यक्तित्व )

सारे भारतवर्ष में भ्रमण करने के लिए, लोगों में जागृति लाने के लिए, लोगों में भावना पैदा करने के लिए, लोगों में भगवान् के प्रति निष्ठा जगाने के लिए, अध्यात्मवाद की स्थापना करने के लिए, आत्मा का विकास करने के लिए और धार्मिकता की स्थापना करने के लिए आपको भेजते हैं।

( युगशिल्पियों के प्रति ) ( भारत )

**धर्मग्रंथ हमें क्या शिक्षण देते हैं, यह जानें**

हम व्यक्ति और समाज के बीच की कड़ी की स्थापना करना चाहते हैं, जिसका नाम परिवार है। इसी में से हीरे, मोती, जवाहरात निकलते हैं। वह आज चरमरा गया है। उसे हम ठीक करना चाहते हैं। परिवार को हमें शिक्षित करना है, संस्कारित करना है।

( परिवार )

आज परिवार संस्था का नाश हो गया है। आज कहीं भी हमें परिवार दिखलाई नहीं पड़ते। वे काम- वासना के क्रियाकलाप वाले मात्र केन्द्र रह गए हैं। उनके अन्दर यह ख्याल तथा प्रयास कहाँ है कि परिवार के अन्तर्गत वे सोचें कि हमें परिवार, समाज, देश एवं संस्कृति के लिए एक महान रत्न देना चाहिए, जो प्रगति कर सके।

( परिवार )

दो आदमी मिलकर एक तीसरी महान आत्मा बनाएँ- ऐसा साहस किसी में नहीं है। आज परिवार वासना प्रधान बन गया है। ऐसी स्थिति में हम एक नया परिवार बसाना चाहते हैं, जिसमें से बेहतरीन चीजें निकल सकें।

( परिवार )

जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनकी शिक्षा, उनकी वाणी हमारे लिए उपयोगी है, परन्तु इससे भी महत्त्वपूर्ण है उनकी जीवन जीने की कला, जो कि हमें सीखनी चाहिए और उससे प्रेरणा लेनी चाहिए तथा अपना आत्म- विकास करना चाहिए। महापुरुषों ने जिन्दगी को कैसे जिया, असल में प्रेरणा हमें वहाँ से मिलती है।

( जीवन )

मन, वाणी और कर्म जब एक जगह मिल जाते हैं, तो त्रिवेणी संगम बन जाता है। उस समय आदमी शक्तिपुंज बन जाता है। साहसी, ताकतवर बन जाता है। उस समय उसकी आँखों में से बिजली निकलती है। उस समय उसका व्यक्तित्व मनुष्यों के ऊपर छाता हुआ नजर आता है तथा वह व्यक्ति सूर्य की तरह चमकता हुआ नजर आता है।

( आत्मविकास ) ( व्यक्तिव )

मन, वाणी, कर्म में एकरूपता का समावेश जिसमें हो जाता है, उसे हम भगवान्, महामानव, अवतार, ऋषि, संत व देवता कहते हैं।

( भगवान ) ( व्यक्तित्व )

हमारा देश गाँवों से भरा है। अधिकांश व्यक्ति कम पढ़े- लिखे हैं, उन्हें हम केवल सरल शब्दों में समझा सकते हैं।

( भारत )

धर्म हमारी जीवात्मा की भूख है। यह दोनों ही परिस्थितियाँ हिन्दुस्तान की फिलोसफी- दर्शन के अनुसार तथा यहाँ की गई- गुजरी परिस्थिति के हिसाब से आवश्यक है।

( धर्म )

श्रीकृष्ण भगवान् के गीता में व्याख्यान से ज्यादा महत्त्वपूर्ण यह जानना आवश्यक है कि उनका व्यवहार और कर्म कैसा था।

( कर्मयोग )

परिवार के लोगों को संस्कारवान बनाने तथा समाज के लोगों को नसीहत देने, दोनों के लिए धर्म से बढ़कर कोई दूसरा साधन नहीं है।

( धर्म ) ( परिवार )

साथियो, हम आपसे यह निवेदन कर रहे थे कि हमें लोकमंगल के कार्य के लिए, जनमानस के परिष्कार करने के लिए महामानवों के चरित्र को लेना पड़ेगा। उसके माध्यम से ही जनचेतना जगाने का कार्य करना पड़ेगा, तभी वह प्रभावकारी व हितकारी सिद्ध हो सकती है।

( युगशिल्पियों के प्रति )

हमें अच्छे चेहरों का फोटो खींचने व दिखाने के स्थान पर उनके चरित्र का जो अच्छा पक्ष है, श्रेष्ठ गुण है, उसको लेना चाहिए।

( व्यक्तित्व )

अतः आप सभी से हमारी प्रार्थना है कि आप जब कभी भी जनता के बीच जाएँ या आप स्वयं पढ़ें, उस समय आप केवल ये बातें लोगों को बतलाने का प्रयास करें, जो प्रेरणादायक हों तथा हमारे उद्देश्यों को पूरा कर सकती हों।

( युगशिल्पियों के प्रति )

हम रामचन्द्रजी के अनुयायी हैं, परन्तु हम अन्धे अनुयायी नहीं हैं। उनकी गलत बातों को हम समर्थन नहीं करेंगे।

( दृष्टिकोण ) ( समाज )

आप मजहब की हर बातें न मानें, जो सत्य हैं उसे मानें, क्योंकि भगवान् उसे कहते हैं, जो सत्य हैं। अतः आप सत्य को, विवेक को, इनसाफ को नारायण मानिये तथा उसी कार्य के लिए गतिशील रहिए, तो आपको लाभ होगा।

( दृष्टिकोण ) ( समाज )

अब हम आपसे यह कहते हैं कि आप रामायण के माध्यम से परिवार, समाज तथा देश को नयी प्रेरणा तथा प्रकाश दीजिए। उसके नये पन्ने पलटकर सबको बतलाइए।

( युगशिल्पियों के प्रति ) ( समाज )

हम वास्तव में किसी देवी, देवता या किताब के गुलाम नहीं हैं। हम तो सत्य के गुलाम हैं। हम अकल, सत्य और इनसाफ के गुलाम हैं।

( दृष्टिकोण ) ( स्वयं के बारे में )

हम चाहते हैं कि आपकी अपनी दृष्टि हो। आप को किसी को भी अपनी अकल नहीं बेचनी चाहिए।

( व्यक्तित्व ) ( समाज )

मित्रो, तप करने से ही अच्छे एवं सुसंस्कारी बच्चे पैदा हो सकता हैं। अगर अच्छे बच्चे पैदा करना है, तो आपको तप करना होगा। तप करने का अर्थ है- शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं को ठीक करना होगा।

( परिवार )

आप जब स्वयं संस्कारवान बनेंगे, तभी आप संस्कारवान बच्चे पैदा कर सकते हैं। अगर साँचा- ठप्पा ठीक नहीं है, तो खिलौना कैसे ठीक बनेगा। इसके लिए अपने आपको गलाइये।

( परिवार )

अपने से छोटों की हिम्मत और इज्जत बढ़ा देने में ही महानता है- हारा आदमी जीत जाता है।

( आत्मविकास ) ( व्यक्तित्व )

निराकार भगवान् तो ऊँचे विचारों में है, आदर्शवादिता में है, उत्कृष्ट चिन्तन में है, भलाई में है। साकार मानना है, तो सारा समाज ही, सारे समाज के लोग ही भगवान् हैं।

( भगवान ) ( समाज )

अरे भगवान् तो एक है और मनुष्य है कि सवारी के लिए लड़ता है। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई के भगवान् एक हैं। इसमें फर्क हमने और आपने पैदा कर दिया है। सूर्य, चन्द्र जब एक ही हो सकते हैं, तो भगवान् दो कैसे हो सकते हैं? मन्दिर में रखे हुए भगवान् जड़ हैं, हम इसके द्वारा अपनी भावना को जाग्रत करते हैं।

( भगवान ) ( कुरीतियां )

भगवान् के भक्त के लिए हीरा तराशना आवश्यक है अर्थात् अपनी अन्तश्चेतना को परिष्कृत करना आवश्यक है। इसके लिए तप करना आवश्यक है।

( भगवान )

दहेज हर दृष्टि से अनैतिक है। इम्मोरेल है। इसे तत्काल बन्द करना चाहिए। यह प्रेरणा हमें रामायण से लेनी चाहिए।

( समाज )

प्राचीन परम्परा थी कि लोगों को जीवन के उत्तरार्द्ध में वानप्रस्थ लेना पड़ता था तथा समाज का उत्तरदायित्व उठाना पड़ता था। समाज में अलख जगाना पड़ता था।

( समाज )

समाज के लोगों को संगठित होकर अनीति के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए। हार जाने से कोई असफल नहीं होता।
( समाज )

भगवान् के प्यार के **तीन** तरीके हैं- पहला भगवान् जिसे प्यार करते हैं, उसे 'संत' बना देते हैं। संत यानि श्रेष्ठ आदमी। श्रेष्ठ विचार वाले, शरीफ, सज्जन आदमी को श्रेष्ठ कहते हैं। वह अन्तःकरण को संत बना देता है। दूसरा- भगवान् जिसे प्यार करते हैं उसे 'सुधारक' बना देते हैं। वह अपने आपको घिसता हुआ चला जाता है तथा समाज को ऊँचा उठाता हुआ चला

जाता है। तीसरा- भगवान् जिसे प्यार करते हैं उसे ‘शहीद’ बना देते हैं। शहीद जिसने अपने बारे में विचार ही नहीं किया। समाज की खुशहाली के लिए जिसने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया, वह शहीद होता है। जो दीपक की तरह जला, बीज की तरह गला, वह शहीद कहलाता है। चाहे वह गोली से मरा हो या नहीं, वह मैं नहीं कहता, परन्तु जिसने अपनी अकाल, धन, श्रम पूरे समाज के लिए अर्पित कर दिया, वह शहीद होता है।

( भगवान )

भक्त माँगने के मूड में नहीं रहता है। भक्त भगवान् के सहायक होते हैं। वह अपने लिए मकान, रोटी, कपड़ा या अन्य किसी चीज की चाह नहीं करता है, उसका तो हर परिस्थिति में भगवान् का सहयोग करना ही लक्ष्य होता है। वह अपनी सारी जिन्दगी भगवान् के लिए अर्पित कर देता है।

( भगवान )

यह बात सही है कि भगवान् के प्यार- **मोहब्बत** का निशान उसी आदमी के ऊपर होता है, जो अपने को त्यागी, बलिदानी के रूप में आगे कर एक आदर्श प्रस्तुत करता है। उसके बिना कोई आदमी भगवान् का प्यारा नहीं हो सकता है।

( भगवान )

पाप अपने आप में फूटता है। अगर आप पारा खा लें, तो वह अपने आप फोड़कर निकल जाता है। उसी प्रकार पाप अपने आप निकलता है। पाप अपने आप खून बहाता है, अपने आप तबाही लाता है।

( स्वास्थ्य )

यही आप लोग समाज को शिक्षण देना कि आप लोग शराफत सीखिए, इन्सानियत को सीखिये, भलमनसाहत को सीखिये- अपनाइये सच्चाई, श्रेष्ठता आदर्शवादिता को सीखिए। इसके द्वारा ही व्यक्ति, परिवार, समाज निर्माण का उद्देश्य पूरा होगा।

(  युगशिल्पियों के प्रति  ) (समाज ) ( परिवार )

**फिजाँ बदल देती है-अवतार की आँधी**

मित्रो! मनुष्य के भीतर दैवी और आसुरी- दोनों ही वृत्तियाँ काम करती रहती हैं।

( व्यक्तित्व )

मलीनता को साफ करने की प्रक्रिया जब बंद हो जाती है या ढीली पड़ जाती है, तो सृष्टि में अनाचार बढ़ जाता है, यह सृष्टि के बहिरंग रूप में भी और अंतरंग रूप में भी फैल जाता है।

( व्यक्तित्व )

जब हम अपना संघर्ष बंद कर देते हैं और दुष्ट प्रवृत्तियों को खुली छूट दे देते हैं, तब हमारा भीतर वाला देव हारने लगता है और दुष्ट प्रवृत्तियाँ खुलकर खेलने लगती हैं।

( व्यक्तित्व )

जब हम अपने भीतर से संघर्ष बंद कर देते हैं, दुष्प्रवृत्तियों को रोकते नहीं, काटते नहीं, तोड़ते- मरोड़ते नहीं, उनसे लोहा लेते नहीं और न ही उन्हें छोड़ते हैं, इसलिए वे हम से चिपक कर बैठी रहती हैं और उनको हमारे अंतरंग जीवन में खुलकर खेलने का मौका मिल जाता है।

( व्यक्तित्व ) ( आत्म-विकास)

भजन इसी का नाम है, जिसमें कि आदमी के जीवन की दिशाधारा बनाई जाती है, विचार बनाए जाते हैं और काम करने के तरीके बदले जाते हैं। इसी का नाम है भजन। भजन माला घुमाना नहीं है, भगवान् की पुकार सुनने का नाम भजन है।

( धर्म )

भगवान् समय- समय पर साकार रूप में भी और निराकार रूप में भी आते हैं। भगवान् के अवतार मन में अवतरित हुए हैं, हृदय में अवतरित हुए हैं, आदर्शवादी सिद्धांतों और श्रेष्ठ कर्मों के रूप में अवतरित हुए हैं। सृष्टि में हवा के रूप में, आँधी के रूप में निराकार भगवान् व्याप्त है। हवाएँ दिखाई नहीं देतीं, फिर भी अपना काम कर जाती हैं। इसी प्रकार निराकार भगवान् है।

( भगवान )

साथियो! भगवान् का हुक्म जिन लोगों ने माना, वे सब आदमी भगवान् के अवतार कहे जा सकते हैं, देवता कहे जा सकते हैं और जिन लोगों ने भगवान् को ठोकर मारी, माला भले ही घुमाते रहे, उन्हें मैं कैसे कह सकता हूँ कि आप भगवान् के भक्त हो सकते हैं।

( भगवान )

मैं किसी तरह से यह विश्वास करने को तैयार नहीं हूँ कि एक व्यक्ति विशेष सारे- के समाज को रोक सकता है, बदल सकता है। ऐसा नहीं हो सकता।

( समाज ) ( व्यक्तित्व )

मित्रो! लोगों के सामने बकवास करने की अपेक्षा, लोगों को उपदेश सुनाने या कथा सुनाने की अपेक्षा यह ज्यादा अच्छा है कि आपने लोगों के सामने जो उपदेश दिए हैं, उसे स्वयं के जीवन में उतारकर बताएँ कि हमने इस तरीके से जीवन जिया है। दुनिया में सबसे ज्यादा प्रभावशाली तरीका यही है।

( जीवन ) ( धर्म )

आप इस तरीके से चलिए, जिसे देखकर के लोग सोच सकें, समझ सकें कि जो सिद्धांत आप कहना चाहते हैं, समझना चाहते हैं, वे आपके रोम- रोम में इस कदर समाए हैं कि आप इस तरह का रास्ता अख्तियार किए बिना जिंदा नहीं रह सकते। अगर आप इतना ज्यादा विश्वास लिए हुए बैठे हैं, तो आपके विचार आपकी वाणी से और आपके आचरण से टपकने चाहिए।

( व्यक्तिव ) ( जीवन )

आदमी के समझने का तरीका, सुझाने का तरीका, गुरु होने का तरीका वो है कि जबान से जो हमने लंबे- चौड़े व्याख्यान सुनाए हैं, कथाएँ सुनाई हैं, उनकी अपेक्षा अपनी जिंदगी का एक नमूना पेश करें।

( कर्मयोग ) ( जीवन )

आदमी की हिम्मत के अलावा दुनिया में और कोई शक्ति नहीं है, जो उसे पार लगा सके। आदमी की हिम्मत सबसे बड़ी ताकत है। ज्वार- भाटे की अपनी ताकत हो सकती है, लहरों की अपनी ताकत हो सकती है, समुद्र की अपनी ताकत हो सकती है, लेकिन इनसान के संकल्प के आगे कोई और ताकत नहीं है।

( जीवन ) ( व्यक्तितत्व )

बेटे! अपने भीतर वाले को कमजोर मत होने दीजिए। भीतर वाले को मजबूत बनाइए। भीतर वाले को कमजोर बना देंगे, तो आप गिर जाएँगे। भीतर वाले को साहस के सहारे उठाएँगे, तो आप आगे बढ़ेंगे और दूसरा आदमी सहायता करने के लिए आएगा। अगर आप अपने को पीछे हटाएँगे, तो लोग आपसे पहले ही दूर हट जाएँगे।

( आत्मविकास ) ( जीवन )

अगर आपका उद्देश्य ऊँचा है और आपके अंदर साहस का अभाव नहीं है, तो परिस्थितियाँ आपके प्रतिकूल हो ही नहीं सकतीं। बेटे! यदि आपका उद्देश्य ऊँचा है, साहस आपका ऊँचा है, तो आपको सहायता देने के लिए सारी देवशक्तियाँ आगे आएँगी, चाहे कितना ही आपके मार्ग में अवरोध क्यों न हो। सारी सहायता आपको मिलती चली जाएगी।

( आत्म-  विकास )

भागवत् की **कहानी** कही जा रही है और लोगों द्वारा सुनी जा रही है। कहते हैं- इसको सुनने से बड़ा भारी पुण्य मिलता है। बेटे! कहानी कहने और सुनने भर से कोई पुण्य नहीं हो सकता। पुण्य केवल उस स्थिति में होगा, जब आप उससे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, जीवन में उतारेंगे, प्रवेश करने देंगे और उसे बाहर अपने क्रियाकृत्यों में, व्यवहार में प्रकट होने देंगे।

( धर्म )

मित्रो! संघर्षों से आदमी समर्थ होता है। संघर्षों से आदमी की श्रद्धा निखरती है। साथियो, कठिनाइयाँ आदमी को निखारने के लिए, उभारने के लिए बेहद आवश्यक हैं।

( श्रम ) ( आत्म-विकास )

मित्रो! मनुष्य हमेशा से संघर्षों से घिरा पड़ा है। जो आदमी अपनी जिंदगी में संघर्षों से मुकाबला नहीं करते, वे जिंदगी का आनंद नहीं ले सकते।

( श्रम ) ( आत्म-विकास )

मुसीबतें हमारी सबसे बड़ी मित्र हैं और सबसे बड़ी सुधारक- अध्यापक हैं, जो हमारी सारी- की कमजोरियों को चूर- चूर कर डालती है और हमारे भीतर हिम्मत का, बहादुरी का माद्दा पैदा करती हैं। कठिनाइयाँ हमें संघर्ष करना सिखाती हैं और न जाने क्या- क्या सिखाती हैं। यह इतनी बड़ी पाठशाला है कि इसमें से होकर आदमी प्रतिभावान निकलता है, नया जीवन लेकर निकलता है और जिन्होंने आराम की जिंदगी जी, हराम की जिंदगी जी, वे मिट्टी के होकर के रहे हैं, कीड़े होकर के रहे हैं।

( जीवन ) ( आत्म-विकास )

संपत्ति, अमीरी आदमी को दुर्व्यसनी बनाती है, अनाचारी और दुराचारी बनाती है तथा असंख्य बुराइयाँ लेकर आती है। ऐय्याशी आदमी को गलाती है और उसे हजम कर जाती है। आदमी को गलत रास्ते पर ले जाती है। यह दौलत की लाभ- हानियाँ हैं और कठिनाइयाँ? कठिनाइयों में जहाँ मुसीबतें उठानी पड़ती हैं, असंख्य दिक्कतें आती हैं, वहीं मनुष्य को अपनी भट्टी में गलाकर कुंदन भी बनाती है।

( पैसा )

जिसके जीवन में कोई प्यार नहीं, कोई सेवा नहीं, कोई बलिदान नहीं, कोई परिश्रम नहीं है, उसे हम महापुरुष नहीं कह सकते। धिक्कार है ऐसे जीवन को।

( जीवन )

वस्तुतः जो आदमी मौत के साथ में जद्दोजहद कर सकते हैं, कठिनाइयों के साथ लड़ सकते हैं, उनका यश चारों ओर फैलता है। जो मुसीबतों के लिए- कठिनाइयों के लिए तैयार रहते हैं, उनकी हिम्मत निखरती जाती है। हिम्मत के बिना सफलता के पहाड़ पर चढ़ना किसी के लिए भी संभव नहीं है।

( आत्म-विकास ) ( जीवन ) ( व्यक्तिव )

शुष्क जीवन, रूखा जीवन, नीरस जीवन कभी भी फलीभूत नहीं हो सकता। हँसने- हँसाने वाले जीवन में, हलकी- फुलकी जिंदगी में सरसता भरी रहती है और वह आप ही खिलती हुई चली जाती है।

( जीवन ) ( आत्म-विकास )

मित्रो! जो आदमी हँसता हुआ, खिलखिलाता हुआ रहता है, उसके चारों ओर खुशियाँ छाईं रहती हैं। हँसने- हँसाने वाले खुद भी खिलखिलाते रहते हैं और दूसरों को भी हँसाते रहते हैं।

( जीवन )

अगर आप लंबी उम्र तक जिंदा और स्वस्थ रहना चाहते हैं, तब आप हँसने- हँसाने की कला सीखें। अगर आपको हँसना आता है, तो समझिए कि जिंदगी के राज को आप समझते हैं।

( जीवन )

क्या आपको निखिल आकाश हँसता हुआ दिखाई नहीं देता। अगर आप कवि हृदय हैं, सरस हृदय हैं, तो आपको सब कुछ हँसता हुआ दिखाई पड़ सकता है। आकाश में बादल आते हैं, घुमड़ते हुए- बरसते हुए दिखाई पड़ते हैं, क्या आप इनका आनंद नहीं ले सकते? नदियाँ कल- कल करती हुई बहती हैं, क्या आप इनका आनंद नहीं ले सकते? आपको इनका आनंद लेना चाहिए और आप को कलाकार होना चाहिए। जिंदगी जीने की कला को आपको

समझना चाहिए। जिंदगी में आनंद के अनुभव होने चाहिए। जीवन में हँसने का समय होना चाहिए, हँसाने का समय होना चाहिए।

( जीवन )

मित्रो! जिसके चेहरे पर हँसी नहीं आती है, उसे बस मरा ही समझो।

( जीवन )

जहाँ पर न्याय की बात कही जा रही है, उचित बात कही जा रही है, इनसाफ की बात कही जा रही है, वहाँ पर आप समता रखिए और उसको मानिए ।  लेकिन अगर आपको गलत बात कही जा रही है, सिद्धांतों की विरोधी बात कही जा रही है, तो आप इनकार कीजिए और उससे लड़िए और यदि जरूरत पड़े, तो मुकाबला कीजिए और मारिए।

( जीवन ) ( दृष्टिकोण )

यह परंपरा कितने युगों से चली आ रही है कि पिता का कहना मानना चाहिए। लेकिन अगर कोई गलत बात मानने के लिए कही जाती है तब? तब पिता का कहना प्रधान नहीं है। तब कहना चाहिए कि मैं गलत बात नहीं मानूँगा। गलत बात कहता है और पिता बनता है। गलत बात कहने वाला व्यक्ति पिता नहीं हो सकता।

( जीवन ) ( दृष्टिकोण )

कोई हमारा रिश्तेदार नहीं है। हमार रिश्तेदार सिर्फ एक है और उसका नाम है- **धर्म** हमारा रिश्तेदार एक है और उसका नाम है- कर्तव्य आप ठीक रास्ते पर चलते हैं, तो हम आपके साथ हैं और आपके हिमायती हैं। बाप के साथ हैं, रिश्तेदार के साथ हैं। अगर आप गलत रास्ते पर चलते हैं, तो आप रिश्ते में हमारे कोई नहीं होते। हम आपकी बात को नहीं मानेंगे और आपको उजाड़कर रख देंगे।

( स्वयं के बारे में ) ( धर्म )

मित्रो! लोग अपनी- अपनी **जन्मभूमि** की रट लगाते रहते हैं कि यह मेरी जन्मभूमि है, वह मेरी जन्मभूमि है। अरे, जन्मभूमि किसकी होती है? जो केवल शरीर को ही सब कुछ मान लेते हैं, उन्हीं की जन्मभूमि होती है, श्रेष्ठ मनुष्यों की कोई जन्मभूमि नहीं होती। हमारी तो हर जगह जन्मभूमि है। जहाँ कहीं भी हमारी आवश्यकता पड़ेगी, हम वहीं बस जाएँगे।

( स्वयं के बारे में ) ( धर्म )

अध्यात्म क्या हो सकता हैं? **अध्यात्म** केवल वह है, जो हमारे क्रियाकलाप में शामिल हो।

( अध्यात्म )

मित्रो! अगर आप शराफत के मार्ग पर चलेंगे और यह समझते रहेंगे कि हम नेक काम कर रहे हैं, शराफत का काम कर रहे हैं, तो फिर जटायु के तरीके से आपको सफलता मिल जाए, तो क्या और न मिले, तो क्या- कोई अंतर नहीं पड़ेगा। सफलता- असफलता से क्या बनता- बिगड़ता है? सफलता- असफलता की कोई कीमत नहीं। आप ने सही काम किया; नहीं किया, आपके लिए इतना ही काफी है।

( जीवन ) ( आत्म-विकास )

यह आपके प्रारब्ध की बात है कि दूसरे लोगों की सहायता या बिना सहायता के आप क्या कर सकते हैं? किसी कार्य का क्या फल मिलता है, आपके हाथ में यह कुछ नहीं है। लेकिन एक बात पूरी तरह से आपके हाथ में है कि आप अपनी जिम्मेदारियाँ निभाएँ और कर्तव्य को पूरा करें। आप कर्तव्यों को पूरा करेंगे, जिम्मेदारियों को निभाएँगे, तो यकीन रखिए, आपको वह लाभ मिल जाएगा, जो कि योगी को मिलना चाहिए, संत को मिलना चाहिए और ज्ञानी को मिलना चाहिए। यही गीता का कर्मयोग है।

( कर्मयोग )

साथियो! अगर आप आँखों से भगवान् को देखना चाहते हों, तो संसार में जितनी दिव्य शक्तियाँ हैं, जितनी दिव्य विचारधाराएँ हैं और जितने दिव्यकर्म दिखाई पड़ते हैं, उनमें आप भगवान् की क्रीड़ा को देख सकते हैं। यही उनके क्रीड़ा करने योग्य स्थल हैं। उनको ही आप अक्षत चढ़ाइए, जल चढ़ाइए, अगरबत्ती जलाइए। उसमें ही अपनी अक्ल लगाइए अर्थात् ध्यान कीजिए।

( भगवान )

ध्यान करने का मतलब है- भगवान् के लिए अपनी अक्ल खरच करना।**'अक्षतांन् समर्पयामि'** का अर्थ है- अपनी कमाई का एक हिस्सा लोकमंगल में लगा देना। 'आचमनं समर्पयामि' एवं 'स्नानं समर्पयामि' अर्थात् पानी चढ़ा देने का भी यही मतलब होता है- समाज को श्रेष्ठ बनाने के लिए, लोगों को अच्छा बनाने के लिए, दुनिया में भलाई लाने के लिए अपना पसीना बहाइए, अपनी अक्ल लगाइए, अपना पैसा खरच कीजिए।

( पैसा )

भगवान् ने गीता में हमें यही उपदेश सिखाया और यह कहा कि कोई भी श्रेष्ठ कार्य बिना श्रम और सहयोग के संभव नहीं है।

( श्रम ) ( भगवान )

अगर हममें से प्रत्येक के भीतर जीवंत भगवान् का सिद्धांत आदर्शवादिता के रूप में उतर सके, हर क्षण उसकी आवाज और वाणी को हम सुन सकें, तो हमारा जीवन धन्य हो जाए |

( भगवान )

## नया व्यक्ति बनेगा, नया युग आएगा - (पुर्नगठन वर्ष में ८ जुलाई १९७९ को शांतिकुञ्ज परिसर में दिया गया प्रवचन)

जीवन निर्माण के लिए चार चीजें आवश्यक हैं। वे हैं- आहार, श्रम, संयम और सफाई। इन चारों में से अगर हम एक को भी कम करेंगे, तो हमारा जीवन निर्माण संभव न हो सकेगा। ये चारों चरण जब भी एक साथ मिल सकेंगे, तो व्यक्ति के उत्कर्ष का आधार बनकर खड़ा हो जाएगा। मात्र एक से ही यह कार्य नहीं हो सकता है।

( जीवन )

तीर्थयात्रा भी एक  प्रक्रिया थी, इसमें लोग अपना परिष्कार भी करते थे तथा लोकशिक्षण का काम भी करते थे। स्वयं तपते थे तथा लोगों को भी प्रेरणा देकर तप का महत्त्व समझाते थे।

( धर्म )

साथियो! हम विचारक्रांति आंदोलन को तीव्र करना चाहते हैं ताकि लोगों के विचार करने की प्रवृत्ति बदले।इसकार्य हेतु हमें अध्यात्म के सिद्धांतों को बतलाने की आवश्यकता है, ताकि जनमानस उसे अपने जीवन में उतार सके।

( स्वयं के बारे में )

जनसाधारण को यह समझाया जाना चाहिए कि मनःस्थिति को सुधारा जाना परम आवश्यक है। अगर हम केवल भौतिकस्थिति को सुधारने का प्रयास करेंगे, तो उससे काम नहीं बनने वाला।

( समाज )

मूढ़मान्यताएँ, अवांछनीयताएँ, अंधविश्वास आदि न जाने कितनी चीजें हमारे बौद्धिक क्षेत्र में हावी हो गई हैं। हमें उसे निकालने का प्रयास करना चाहिए। उसके स्थान पर हमें विवेकशीलता तथा दूरदर्शिता की स्थापना करने का प्रयास करना चाहिए जो उचित है, उसे ही ग्रहण करें। जो उचित नहीं है, उसे झाड़कर बुहारी से हमें फेंक देना चाहिए। जनमानस को उसी प्रकार की हमें शिक्षा देनी है, ताकि अनावश्यक चीजें, जो हमारे बौद्धिक क्षेत्र में घुस पड़ी हैं, उन्हें हम हटा सकें।

( कुरीतियां ) ( समाज )

हमें हर आदमी को यह समझाना होगा कि आप अपने जीवन की नीति ‘सादा जीवन उच्च विचार’ की बनाएँ। मनुष्य अगर अपने अंदर सादा जीवन अपना ले, तो उसे छल- कपट करने की,बेईमानी करने की आवश्यकता नही रह जाएगी।

( समाज ) ( दृष्टिकोण )

वास्तव में बड़प्पन एवं ठाट- बाट के कारण मनुष्य की कामनाएँ बढ़ती जाती हैं और वह अपना नैतिक स्तर खो बैठता है। अगर हर मनुष्य को ‘सादा जीवन- उच्च विचार’ की बात

समझायी जा सके, तो हमारा विश्वास है कि हम वैसा बन सकते हैं तथा हमारा स्तर वैसा हो सकता है, जैसा कि हम प्राचीनकाल में थे।

( समाज ) ( दृष्टिकोण )

संयम, नम्रता, सज्जनता, ईमानदारी, जिम्मेदारी, कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे सद्‌गुण हमारे स्वभाव में आ जाएँ, तो हमारे नैतिक स्तर में विस्तार हो सकता है। आदर्शों एवं सिद्‌धांतों को वे जीवन में जिएँगे, तो हमें पक्का विश्वास है कि हमारा नैतिक स्तर बढ़ेगा और हमारी खोई हुई गरिमा वापस मिल सकेगी।

( समाज )

'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की मान्यता जन- जन के अंतःकरण में जमाई जानी चाहिए। हमारे अंदर यह मान्यता होनी चाहिए कि हम दूसरों के साथ वही व्यवहार करेंगे जिनकी हमें दूसरों से अपेक्षा रहती है। सामाजिक क्रांति के लिए यह परम आवश्यक है।

( समाज ) ( दृष्टिकोण )

जिस प्रकार हम अपने छोटे से परिवार का ध्यान रखते हैं, उसी प्रकार हमें पूरे समाज के लोगों का ध्यान रखना चाहिए। हमें इस तरह का ध्यान रखना तथा प्रयत्न करना आवश्यक है, ताकि लोग सुखी संपन्न रह सकें।

( समाज ) ( परिवार )

आत्मवत् सर्वभूतेषु' की मान्यता आ जाना आवश्यक है, तभी हम मिल- बाँटकर खा सकते हैं और सुखी एवं संपन्न रह सकते हैं। हम समाज में सुख बाँटने का प्रयास करें, हम उपार्जन तो करें, यह अच्छी बात है, परंतु सही उपयोग करना भी सीखें, तभी समाज में सुख- शांति आ सकती है।

( समाज )

समता हमारे जीवन का अंग होनी चाहिए। नर- नारी में भिन्नता भी नहीं होनी चाहिए। श्रेष्ठ समाज के लिए समता का होना परम आवश्यक है। जाति, लिंग की समानता के साथ ही आर्थिक समता भी होनी चाहिए।

( समाज )

हममें से प्रत्येक नागरिक को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करना चाहिए। हममें से प्रत्येक नागरिक को सहकारिता के सिद्धांत को जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए। सामाजिक जीवन में हर काम की व्यवस्था बनानी चाहिए।

( समाज )

समाज में जहाँ कहीं भी अनीति, अन्याय, अत्याचार दिखाई पड़े, उससे लड़ने के लिए हमें एवं आपको जटायु जैसा साहस दिखाना चाहिए।

( समाज )

आसपास के वातावरण में जहाँ कहीं भी आपको लगता हो कि अनैतिकता, अन्याय का बोलबाला है, तो आपको उसका डटकर विरोध करना चाहिए। इतना ही नहीं, संघर्ष के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

( समाज )

जहाँ कहीं भी अनाचार दिखलाई पड़ता हो, तो उससे लोहा लेने के लिए अपनी परिस्थिति के अनुसार असहयोग, संघर्ष जो भी संभव हो, अवश्य करना चाहिए। इसके लिए आप अपने अंदर साहस इकट्ठा करें।

( समाज )

**उपासना, साधना व आराधना**

**मार्च 1980  में शान्तिकुञ्ज परिसर में दिया उद्‌बोधन**

उपासना माने भगवान् के नजदीक बैठना। नजदीक बैठने का भी एक असर होता है। चन्दन के समीप जो पेड़- पौधे होते हैं, वह भी सुगंधित हो जाते हैं। हमारी भी स्थिति वैसी ही हुई।

( धर्म )

मित्रो, **उपासना** का मतलब समर्पण है। आपको भी अगर शक्तिशाली या महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बनना है, बड़ा काम करना है, तो आपको भी बड़े आदमी के साथ, महान गुरु के साथ चिपकना होगा।

( धर्म )

उच्च आदर्शों, उच्च सिद्धान्तों को अपने साथ मिला लेना ही उपासना कहलाती है। हमने अपने जीवन में इसी प्रकार की उपासना की है, आपको भी इसी प्रकार की उपासना करनी चाहिए।

( धर्म )

हमने अपने गुरु को भगवान् बना लिया है। हमने उन्हें एकलव्य की तरह से अपना सर्वस्व मान लिया है। हमने उन्हें एक बाबाजी, स्वामी जी , गुरु नहीं माना है, बल्कि भगवान् माना है। हमारे पास इस प्रकार भगवान् की शक्ति बराबर आती रहती है।

( स्वयं के बारे में )

आपको भी अगर लाभ प्राप्त करना है, तो हमने जैसे अपने गुरु को माना और समर्पण किया है, आप भी उसी तरह मानिये तथा समर्पण कीजिए। उसी तरह कदम बढ़ाइए। हमने उपासना करना सीखा है और अब हम हंस बन गये हैं। आपको भी यही चीज अपनानी होगी।

इससे कम में उपासना नहीं हो सकती है। आप पूरे मन से, पूरी शक्ति से उपासना में मन लगाइये और वह लाभ प्राप्त कीजिए जो हमने प्राप्त किये हैं। यही है उपासना।

( स्वयं के बारे में ) ( साधना )

वस्तुतः जो साधना हम करते हैं, वह केवल अपने लिए होती है और स्वयं की होती है। साधना का अर्थ होता है- साध लेना। अपने आपको सँभाल लेना, तपा लेना, गरम कर लेना, परिष्कृत कर लेना, शक्तिवान बना लेना, यह सभी अर्थ साधना के हैं।

( साधना )

साधना में भी यही होता है। मनुष्य के, साधक के मन के ऊपर चाबुक मारने से, हण्टर मारने से, गरम करने से, तपाने से वह काबू में आ जाता है। इसीलिए तपस्वी तपस्या करते हैं। हिन्दी में इसे 'साधना' कहते हैं और संस्कृत में 'तपस्या' कहते हैं। यह दोनों एक ही हैं। अतः साधना का मतलब है- अपने आपको तपाना।

( साधना )

अपने अन्दर जो बुराइयाँ हैं, भूले हैं, कमियाँ हैं, दोष- दुर्गुण हैं, कषाय- कल्मष हैं, उसे दूर करना व उनके लिए कठिनाइयाँ उठाना ही साधना या तपस्या कहलाती है। इसी का दूसरा नाम पात्रता का विकास है।

( आत्म -विकास )

वासना, तृष्णा और अहंता- यही तीन सुराख हैं, जो मनुष्य को आगे नहीं बढ़ने देते हैं। इन्हें ही भवबन्धन कहा गया है। भगवान् आपको अपनाने के लिए हाथ बढ़ा रहा है, परन्तु ये तीन हथकड़ियाँ वासना, तृष्णा एवं अहंता आपको भगवान् तक पहुँचने में रुकावट पैदा कर रही हैं। आपको इनसे लोहा लेना होगा। आप अगर अपने हाथों को नहीं खोलेंगे, तो भगवान् की गोद में आप कैसे जाएँगे?

( साधना )

राम नाम के महत्त्व से ज्यादा आपकी जीभ का महत्त्व है। आप जीभ पर कंट्रोल रखिए, तब ही काम बनेगा। जीभ पर काबू रखें, आप ईमानदारी की कमाई खाएँ, बेईमानी की कमाई न खाएँ।

( आत्म-विकास )

हमने अपनी जीभ को साफ किया है। उसे इस लायक बनाया है कि गुरु का नाम लेकर जो भी वरदान देते हैं, वह सफल हो जाता है।

( स्वयं के बारे में )

सादा जीवन के माने है- कसा हुआ जीवन। आपको अपना जीवन सादा बनाना होगा। माल-मजा उड़ाते हुए, लालची और लोभी रहते हुए आप चाहें कि राम नाम सार्थक हो जाएगा? नहीं कभी सार्थक नहीं होगा। हमारे गुरु ने, हमारे महापुरुषों ने हमें यही सिखाया है कि जो आदमी महान बने, ऊँचे उठे हैं, उन सभी ने अपने आपको तपाया है।

( जीवन )

हमने एक ही चीज सीखी है कि अपने आपको अधिक से अधिक तपाएँ, अधिक से अधिक घिसें, ताकि हम ज्यादा- से समाज के काम आ सकें। समाज की सेवा करना ही हमारा लक्ष्य है।
( समाज ) ( स्वयं के बारे में )

आराधना की बात बताता हूँ आपको कि आराधना क्या है और किसकी की जानी चाहिए? आराधना कहते हैं- समाजसेवा को, जन कल्याण को। सेवाधर्म वह नकद धर्म है, जो हाथों हाथ फल देता है। इसमें पहले बोना पड़ता है।

( समाज )

भगवान् न किसी को गरीब बनाता है, न अमीर। भगवान् न किसी को धनवान बनाता है, न कंगाल बनाता है।

( भगवान )

शरीर, बुद्धि और भावना-ये **तीन** चीजें जो भगवान् ने दी हैं। यह तीन शरीर-स्थूल सूक्ष्म और कारण के प्रतीक हैं। इसमें तीन चीजें भरी रहती हैं- स्थूल में श्रम, समय। सूक्ष्म में मन, बुद्धि। कारण में भावना। इसके अलावा जो चौथी चीज है, वह है धन-सम्पदा जो मनुष्य कमाता है। इसे भगवान् नहीं देता है।

( भगवान )

हमने सूर्योदय से पहले भगवान् का नाम लिया है अर्थात् भजन किया है, बाकी समय हमने भगवान् का काम किया है। सूर्य निकलने से लेकर सूर्य डूबने तक सारा समय भगवान् के लिए लगाया, समाज के लिए लगाया है।

( कर्मयोग ) ( स्वयं के बारे में )

हमने निश्चय किया कि हम अपनी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर ले जाएँगे तथा इससे समाज, देश को ऊँचा उठाने का प्रयास करेंगे। हमने अपनी अक्ल एवं बुद्धि को यानी अपने सारे-के-सारे मन को भगवान् के कार्य में लगाया।

( स्वयं के बारे में )

हमने अपनी भावना एवं संवेदना के माध्यम से इस संसार में रहने वाले व्यक्तियों के दुःखों के निवारण के लिए हमेशा उपयोग किया। हमने हमेशा यह सोचा कि हमारे पास कुछ है, तो उसे किस तरह से बाँट सकते हैं? अगर किसी के पास दुःख है, तो उसे किस तरह से दूर कर सकते हैं। यही हमने अपने पूरे जीवनकाल में किया है। इसके अलावा जो भी धन था, उसे भी भगवान् के कार्य में खर्च कर दिया।

( स्वयं के  बारे में )

मित्रो, हमने पत्थर की मूर्ति के लिए नहीं, वरन् समाज के लिए काम किया है। पत्थर की मूर्ति को भगवान् नहीं कहते हैं। समाज को ही भगवान् कहते हैं। हमने ऐसा ही किया है।

( स्वयं के बारे में )  ( भगवान )

हमारा भगवान् भी उसी तरह का है। उन्होंने कहा था कि जो कुछ भी करना भगवान् के लिए करना, समाज के लिए करना। हमने सारी जिन्दगी इसी तरह का काम किया है और जितना किया है, उतना पा लिया है। आगे जो हम करेंगे, उसके एवज में भी हम पाते रहेंगे।

( भगवान )

हमारे ऊपर हमेशा फूल बरसते रहते हैं, जिसे हम प्रोत्साहन, साहस, हिम्मत, प्रेरणा, उत्साह, उम्मीद कह सकते हैं। देवता इसे हमारे ऊपर बरसाते रहते हैं।

( स्वयं के बारे में )

मनुष्यों को सुसंस्कारी तथा समुन्नत बनाने के लिए जो भी संभव था, उसे हमने पूरा किया है। हमारे पिता ( परमात्मा ) हमसे हमेशा प्रसन्न रहते हैं। हमने कहा कि जो कुछ भी हमारे पास है, वह आपका है। उसने भी ऐसा ही कहा कि जो कुछ हमारे पास है, वह तुम्हारा है। हमने कहा कि हमें नहीं चाहिए आपका, उसने भी वैसा ही कहा।

( भगवान ) ( स्वयं के बारे में )

भगवान् हमेशा हमारे **बॉडीगार्ड** के रूप में फिरता रहता है। वह कहता है कि कभी भी हिम्मत मत हारना, साहस मत खोना, किसी से डरना मत। हम सुरक्षित होकर मिनिस्टर के तरीके से शानदार ढंग से चलते हैं। यह हमारा प्रत्यक्ष चमत्कार है, जो आप देख रहे हैं।

( स्वयं के बारे में )

मित्रो, साधना की सिद्धि होना निश्चित है। साधना सामान्य चीज नहीं है। यह असामान्य चीज है। परन्तु साधना को साधना की तरह किया जाना परम आवश्यक है।

( साधना )

जो ईमानदार, नेक, शरीफ है तथा जो समाज के लिए, देश के लिए, लोकहित के लिए जीता है, उसे ब्राह्मण कहते हैं। एक औसत भारतीय की तरह जो जिए तथा अधिक से अधिक

समाज के लिए लगा दे, उसे ब्राह्मण कहते हैं। हमने भी मालवीय जी के सामने यह संकल्प लिया था कि हम ब्राह्मण का जीवन जियेंगे। हमने वैसा ही जीवन प्रारम्भ से जिया है।

( ब्राम्हण और ब्राम्हणत्व )

समय, श्रम, बुद्धि-जो भगवान् से मिली है। धन वह है, जो संसार में कमाया जाता है। ये चारों चीजें हमने समाज में लगा दीं। इसके द्वारा हमारी पूजा, उपासना एवं साधना हो गयी। हमारे ब्राह्मण-जीवन का यही चमत्कार है। यही मेरी पूजा है।

( स्वयं के बारे में ) ( ब्राम्हण और ब्राम्हणत्व )

हमारी उपासना और साधना ऐसी है कि हमने सारी जिन्दगी भर धोबी के तरीके से अपने जीवन को धोया है और अपनी कमियों को चुन-चुनकर निकालने का प्रयत्न किया है। आराधना हमने समाज को ऊँचा उठाने के लिए की है। आप यहाँ आइये और देखिये, अपने मुख से अपने बारे में कहना ठीक बात नहीं है।

( स्वयं के बारे में )

हमारे जो भी सहयोगी, सखा, सहचर एवं मित्र हैं, उनसे हम यही कहना चाहते हैं कि आप केवल अपने तथा अपने परिवार के लिए ही खर्च मत कीजिए, वरन् कुछ हिस्सा भगवान् के लिए भी खर्च कीजिए।

( ब्राम्हण और ब्राम्हणत्व )

यदि आप हमारे कंधे से कंधा मिलाकर और कदम से कदम मिलाकर चल सकें, तो हम आपको यकीन दिलाते हैं कि आपका जीवन धन्य हो जाएगा, पीढ़ियाँ आपको श्रद्धापूर्वक याद रखेंगी।

( युगशिल्पियों के प्रति )

**महाकाल के सहभागी बनें**

**गुरुपूर्णिमा पर्व १९८० पर दिया गया पावन संदेश**

इस समय हमारा एक ही निवेदन है कि आप महाकाल के, प्रज्ञावतार के सहयोगी का रोल अदा करें। यह संदेश महाकाल ने, प्रज्ञावतार ने, हमारे गुरुदेव ने भेजा है। आप इस काम को कर पायेंगे, तो सारा संसार आपकी सराहना करेगा तथा आप अपने आप भी अपनी सराहना करेंगे। अगर आप इस प्रकार की हिम्मत कर सकेंगे, तो आपको ही लाभ होगा।

( युगशिल्पियों के प्रति )

भगवान् काम नहीं कर सकता है, क्योंकि वह अपने आप में निराकार है। आप भगवान् का साकार रूप बनकर उनका काम करने का प्रयास करें। इस युगसंधि की वेला में भगवान् जो कि निराकार हैं, उन्हें साकार सहयोगी लोगों की आवश्यकता है।

( भगवान)

इस समय सारे विश्व की व्यवस्था नये सिरे से बनने वाली है। उस समय आप कितने महान बनेंगे, इसका जवाब समय देगा।

( भविष्यवाणियाँ - चेतावनियां )

भगवान् का नाम लेने वाले भी भगवान् के भक्त हो सकते हैं, परन्तु उन्हें भगवान् का काम भी करना पड़ेगा। इससे कम में बात बनने वाली नहीं है। इस समय जो भगवान् के भक्त हैं, जिन्हें इस संसार के प्रति दर्द है, उनके नाम यह विशेष संदेश भेजा गया है कि वे अपने व्यक्तिगत लाभ के कामों में कटौती करें एवं भगवान का काम करने के लिए आगे आयें। भगवान् के काम के लिए, सहायता के लिए आगे आयें।

( भगवान) ( युगशिल्पियों के प्रति )

आपने कामनापूर्ति के लिए उपासना की, इसलिए वह सारा- का प्रयास निष्फल चला गया। आप तपस्यायुक्त उपासना कीजिए, फिर देखिये उसमें चमत्कार होता है या नहीं।

( उपासना )

आपका अनुष्ठान खण्डित हो जाएगा अर्थात् अधूरा रह जाएगा, तो हम उसे पूरा करेंगे। आपकी मृत्यु हो जाने पर भी हम उसे पूरा करेंगे। आप अगर बीच में भी हार जाएँ या थक जाएँ, तो हम आपके बदले का भार उठा लेंगे।

( स्वयं के बारे में )

यह प्रज्ञावतार का केन्द्र है। अतः इसमें चार चीजें अवश्य होनी चाहिए, इसके बिना कोई उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता है।
वे हैं- (१) मन्दिर, (२) पुस्तकालय, (३) हॉल, (४) कार्यकर्ता निवास।

अगर कोई चंदा नहीं देता है, तो कोई बात नहीं। आप यह बात नहीं कहें, वरन् यह सोचें कि आपके कितने बच्चे हैं? हर एक की शादी में आपने दस हजार रुपये खर्च किये हैं, तो इस बच्चे अर्थात् चरणपीठ के लिए भी छह हजार खर्च करें। इसके बिना कृपणता के इस युग में युग निर्माण नहीं हो सकता है।

आप भगवान् के निमित्त अपना समय देना शुरू कीजिए, फिर देखिये आपको सहयोग देने के लिए दूसरे आदमी आपके पास आते हैं कि नहीं। आप पहले अपना लगाइये तो सही, फिर देखिये दूसरा आदमी किस प्रकार देता है।

संत से क्या मतलब है? संत का मतलब है, पुरुषार्थी, त्यागी और तपस्वी।

आप देखेंगे कि इस गायत्री परिवार के लोगों में से कितने संत निकलते हुए चले आयेंगे। ऐसे व्यक्ति आपको दिखायी देंगे जिनकी जिम्मेदारी कम हो गयी है या जो अपने घर को देखते हुए भी मिशन का काम करते हैं, वे सब संत हैं |

उन लोगों का नाम संत है, जो बादलों की तरह से घूमते हैं और भगवान् का संदेश हर जगह पहुँचाते हैं तथा हर आदमी के भीतर जीवट पैदा करते हैं।

गायत्री परिवार के घरों में ज्ञानघट- धर्मघट के रूप में स्थापित कर दिया है। उनसे कह दिया है कि आप नित्य इसमें दस पैसा डालें। हम किसी भी गायत्री परिवार के व्यक्ति को बिना ज्ञानघट के नहीं रहने देंगे। यह ज्ञानघट का पैसा विशुद्ध रूप से ब्राह्मणों के लिए खर्च होगा। ब्रह्मभोज का अर्थ है- हमें कार्यकर्ताओं की आवश्यकता पड़ेगी, हम इसके द्वारा उनकी आवश्यकताओं को पूरा करेंगे।

हमें संत- ब्राह्मणों को जगाना है तथा इन लोगों के लिए ब्रह्मभोज की व्यवस्था बनानी है। यह सारा- का काम आपको करना है। आप इस प्रकार के व्यक्तियों की तलाश करें। अगर आपका कुछ प्रभाव है या दबाव है, तो उसका भी उपयोग करें।

अगर सम्भव हो तो, आप एक दिन का वेतन दीजिए। अगर बेकार की चीजें हैं, तो उन्हें हमें दीजिए। आपकी चीजों की भगवान् को आवश्यकता है। आप जो करेंगे, उसका लाभ- मुनाफ़ा आपको अवश्य ही मिलेगा।

## युगसंधि महापुरश्चरण और संकट निवारण

### ५ अगस्त, १९८० को शांतिकुंज परिसर में दिया प्रवचन

समय की माँग, समय की पुकार यह है कि इन दिनों वातावरण में जो अवांछनीय तत्त्वों का घुलन एवं मिलन हो गया है, उसे समय रहते निरस्त किया जाय, ताकि जनसाधारण की स्थिति ठीक हो सके एवं सभी को खुले वातावरण में साँस लेने का मौका मिल सके।

मित्रो! इन दिनों जो **परिस्थितियाँ** हैं, वे अगले दिनों बहुत ही विपन्न एवं विषम होने वाली हैं। इसके कारण अनेक प्रलयंकारी घटनाएँ घटित होंगी, विनाश की लीला होगी। उस समय मनुष्य के ऊपर बहुत सारी मुसीबतें आयेंगी। चारों दिशाओं में आँधी- तूफान पानी- बाढ़ आदि का प्रकोप दिखाई देगा। इसका कारण यह है कि इस समय नेचर- प्रकृति नाराज हो चुकी है। वह बदला लेना चाहती है। इस परिस्थिति में कोई भी आदमी सुरक्षित नहीं है। मौसम का भी कोई ठिकाना नहीं रहेगा। गर्मी में सर्दी और सर्दी में गर्मी महसूस होगी। नित्य

नयी- नयी बीमारियाँ बढ़ेंगी। डॉक्टरों के पास भी इसका कोई इलाज नहीं होगा। भाई- भाई में, पति- पत्नी में भी विश्वास नहीं होगा। सामूहिक बलात्कार, चोरी, उठाईगीरी, अनाचार, मारकाट जैसे अपराध, जो कि रावण के एवं कंस के जमाने में भी नहीं थे, उससे भी ज्यादा बढ़ेंगे। दहेज लोलुपों द्वारा बहुओं को जलाया जाएगा। लोगों में राग, द्वेष, अहंकार बढ़ता चला जाएगा। महत्त्वाकाँक्षा लोगों के सिर पर चढ़कर बोलेगी।

हमने अपनी जिन्दगी में गायत्री के चौबीस महापुरश्चरण किए हैं। इसकी साधना एवं तप से प्राप्त बल के द्वारा ही हमने युग निर्माण जैसे कठिन कार्य को साहसपूर्वक पूर्ण करने की हिम्मत की है।

एकाकी और सामूहिक प्रयत्नों की सफलता के स्तर में काफी अन्तर रहता है। अलग- अलग दस आदमी रहकर जितना काम करेंगे, उन दसों का सम्मिलित प्रयत्न कहीं अधिक सफलता प्रदान करेगा। इसलिए भारतवर्ष में हमेशा से तप एवं सामूहिक साधना का विशेष महत्त्व रहा है।

हमारे **नैष्ठिक** साधक, जो इसमें हमारा सहयोग करना चाहते हैं, उन्हें इन पाँच संकल्पों को पूरा करना होगा। पहला है- हर दिन न्यूनतम पाँच माला गायत्री महामंत्र का जप। दूसरा- पन्द्रह मिनट की प्राण संचार की ध्यान- धारणा तीसरा- गुरुवार को बिना नमक का एक समय का भोजन, ब्रह्मचर्य का पालन तथा दो घंटे मौन व्रत का पालन। चौथा- महीने में कम- से एक बार न्यूनतम चौबीस आहुतियों का यज्ञ- हवन पाँचवाँ आश्विन एवं चैत्र नवरात्रियों में चौबीस- चौबीस हजार का गायत्री अनुष्ठान।

गायत्री के तत्त्वदर्शन का आलोक जन- जन तक पहुँचाना हमारा लक्ष्य है। हमने इस महामंत्र की साधना चौबीस साल तक करके इसके लाभ के बारे में जाना है। वास्तव में इस महामंत्र के चौबीस अक्षरों में चिन्तन, चरित्र और व्यवहार को सुसंस्कृत बनाने वाले सभी तत्त्व कूट- कूट कर भरे हैं।

इन दिनों ऐसी ही बुद्धिमत्ता की आवश्यकता है, जो प्राणवानों के शौर्य- साहस को बढ़ाये और जन- जन की प्रखरता को जगाने के लिए काम आये।

अश्वमेध यज्ञ की प्रक्रिया बड़ी ही महान है, इसमें लाखों लोग बैठकर साधना करते हैं, तप करते हैं, यज्ञ- हवन करते हैं तथा वातावरण को बदल डालते हैं।

युगसंधि का यह विशेष पर्व है। ऐसे समय हजारों- लाखों वर्ष के बाद आते हैं। भगवान् को युगपरिवर्तन करना पड़ता है, परन्तु वे केवल आप जैसी आत्माओं को ही अपना माध्यम बनाते और प्रभावित करते हैं।

मित्रो! आज आपको जनजागरण के लिए, युगधर्म निबाहने के लिए पुकारा गया है। अतः आपको इस कार्य के लिए आगे आकर और बढ़- चढ़कर कार्य करना चाहिए।

सामूहिकता का लाभ सभी जानते हैं। प्राचीनकाल से लेकर अब तक सभी बड़े- बड़े काम सामूहिकता के द्वारा हल होते रहे हैं।

गायत्री उपासना के द्वारा ही हमने सारा चमत्कार पाया है।

हमें विश्वास है कि यह कार्य बहुत व्यापक स्तर पर बढ़ने वाला है। हमें यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि यह कार्य बढ़ेगा। अनेक कार्यक्रम होंगे। इससे वातावरण में अप्रत्याशित रूप से बदलाव आयेगा। नयी पीढ़ियाँ बदलती चली जाएँगी।

नवनिर्माण के इस कार्य के अन्तर्गत भी जो आगे रहेंगे तथा अपनी भागीदारी देंगे, उन्हें भी श्रेय, सम्मान व सहयोग अधिकाधिक मिलेगा। आपका जो श्रम, भावना, धन इसमें लगा है, वह हजार गुना होकर वापस होगा और आप धन्य हो जाएँगे।

अगले दिनों युगसृजन में गायत्री महाविद्या को युग- शक्ति का रूप धारण करना है। अगले ही दिनों उसे विश्वदर्शन का, अध्यात्म का केन्द्र बिन्दु बनने का अवसर मिलेगा।

## जीवन को धन्य बनाने का महानतम अवसर

## सितम्बर, १९८० में शान्तिकुञ्ज में दिया गया उद्बोधन

इस समय अपनी पृथ्वी के संतुलन को ठीक करने के लिए भगवान् ने अवतार लेने का निश्चय किया है। ये **चौबीसवाँ**अवतार अन्तिम अवतार होगा। चौबीस अक्षर गायत्री मंत्र के होते हैं। यह प्रज्ञावतार ही गायत्री का अवतार होगा, जो इस शतक के अंत तक अपना काम पूरा कर लेगा और नया युग लाएगा। इसकी तैयारियाँ हो चुकी हैं। ये जो भविष्यवाणियाँ हैं,

इन्हें आप मखौल न मानें। ये शब्द स्वयं महाकाल ने- भगवान् ने कहे हैं, ऐसा मानना चाहिए।

**भगवान्** का अवतार तो होता है, परन्तु वह निराकार होता है। उनकी वास्तविक शक्ति जाग्रत आत्मा होती है, जो भगवान् का संदेश प्राप्त करके अपना रोल अदा करती है।

आज अध्यात्म क्षेत्र में वे ही व्यक्ति हैं, जो थोड़ा बहुत पूजा- पाठ करने के बाद अपनी सभी मनोकामनाएँ पूरी कराना चाहते हैं। ये सारे के सारे व्यक्ति सोये हुए हैं।

आज **प्रज्ञावतार** को ऐसे जागरूकों की आवश्यकता है, जो दुनिया के कोने- कोने में जाकर सोये हुए लोगों को जगा सकें, उनके मन- प्राणों को झकझोर सकें। उनमें साहस और हिम्मत पैदा कर सकें।

हम एक बात पुनः आपसे कहना चाहते हैं कि फिर ऐसा कोई समय नहीं आयेगा, जिसमें आपको औलाद या धन से वंचित रहना पड़े, परन्तु अभी इस जन्म में इन दोनों की बाबत न सोचें। आपको भगवान् के इस काम के अन्तर्गत रोटी, कपड़ा और मकान की आवश्यकता सदा पूरी होती रहेगी, इसके लिए किसी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।

आपके बच्चे जब कमाने लग गए हैं, तो क्यों आप घर में बैठकर मर रहे हैं? आपको घर से बाहर निकलना चाहिए। आपको परिव्राजक के रूप में बादलों की तरह घर से निकलना चाहिए तथा समाज के लोगों को नया प्रकाश, नयी प्रेरणा, नयी रोशनी देनी चाहिए।

गायत्री परिवार के हर **व्यक्ति** से हमारा अनुरोध है कि जितने व्यक्ति अपने घर की व्यवस्था करके जितना समय समाजसेवा के लिए निकाल सकते हों, वे युगसृजन की भूमिका निभाने के लिए आगे आएँ।

संत की प्रवृत्ति को आप जगाइए तथा अपने समय का एक अंश लगाकर समाज के लोगों को ऊँचा उठाने का प्रयास करें। उन्हें जीवन जीने की कला सिखाएँ।

## आत्मिक प्रगति का ककहरा

## शान्तिकुञ्ज हरिद्वार में अक्टूबर 1980 में दिया उद्बोधन

भगवान् ने अपनी औलाद के लिए अपने अलग नियम व तरीके बनाए हैं और उसका नाम रखा है, "**मनुष्य**।" मनुष्य क्या है? मनुष्य भगवान् की नकल है।

मित्रो! भगवान् ने अपनी सर्वश्रेष्ठ प्रतिमा इनसान के रूप में ही बनाई है। शेर जब बच्चा पैदा करेगा, तो अपने समान ही पैदा करेगा, बिल्ली पैदा नहीं करेगा। इसी प्रकार सभी जीव अपने समान ही संतानोत्पत्ति करते हैं। इसी प्रकार भगवान् ने अपने प्रतिरूप में इनसान को बनाया है।

मित्रो! आज हमारे सामने उपयोग की समस्या है। उत्पादन की समस्या नहीं है, कमाने की समस्या नहीं है, वरन् समस्या यह है कि धन को किस तरह से खरच किया जाए।

भगवान् आपसे यह कहता है कि यदि आपकी उपासना सही हो, तो आप साधारण मनुष्य से भगवान् बन सकते हैं। आप नर से नारायण बन सकते हैं।

जिस प्रकार से बच्चे गुड्डे-गुड़ियों से खेलते हैं, उसी प्रकार आप भी पूजा- पाठ के द्वारा भगवान् से खेलते हैं। आपने कभी उपासना का महत्त्व ही नहीं समझा। यदि समझा होता, तो भगवान् के नजदीक बैठने वाले जैसे उनके बराबरी के हिस्सेदार हो जाते हैँ, आप भी उसी प्रकार उनके बराबर हो जाते।

बेटे! भगवान् को चौकी पर नहीं, अपने हृदय में रखा जाता है। जिससे हमारे खून के साथ भगवान् घुल- मिल जाए। उपासना जीवन में समाहित की जाती है, साँसों में घोली, समाई जाती है। उपासना जीवन का साइंस है, जो हमारे जीवन के प्रत्येक आचरण में छाई रहती है। गोमुखी में हाथ डालकर माला घुमाने से उपासना नहीं होती।

मित्रो! हम उपासना को आपके चिंतन में देखना चाहते हैं, आपके विचारों में देखना चाहते हैं।हिंदुस्तान के करोड़ से अधिक इनसान नकली उपासना करते हैं। नकली उपासना से कभी भी आप **भगवान्** में समाविष्ट नहीं हो सकते।

आज हिंदुस्तान में न जाने कितने बाबाजी रंग- बिरंगे कपड़ा पहनकर उपासना करते हैं और जगह- जगह लोगों से अपमानित होते हुए डोलते हैं। क्यों? क्योंकि उनके पास नकली उपासना है।

आपको माला व पूजा- पाठ के जरिए बहकाया जा रहा है। इस पूजा- पाठ से आप असली कर्मकाण्डों की तह तक नहीं पहुँच पाएँगे और ईश्वर के ज्ञानरूपी चमत्कार से आप वंचित रह जाएँगे। अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर पाएँगे।

आप सब राम- राम की में लगाए रहते हैं। आप वास्तविकता का मुकाबला कीजिए, नहीं तो जंजालों में भटक जाएँगे। आप जमीन पर चलिए।

भजन से अनेक काम पूरे हो सकते हैं, परंतु भजन को दृढ़ बनाने के लिए आदमी का दृढ़ चरित्र रहना, उदार रहना अति आवश्यक है। हमारा चरित्र हमेशा ऊँचा होना चाहिए। साधना का यही तरीका है, जिसे मैं आज तक आपको समझाता चला आया हूँ।

आप अपने अंदर से कुविचारों को निकाल फेंकिए, दृढ़ता से उनका मुकाबला कीजिए। अपने अंदर सुविचारों को पनपने दीजिए। छेनी से छेनी काटी जाती है, यदि आपके बुरे विचार आप पर हावी होते हैं, तो आपके पास ब्रहमचर्य का हथियार है, उसका उपयोग कीजिए। यदि दोनों की कुश्ती करवाई जाए, तो बुरे विचारों को अच्छे विचार एक ही टक्कर में चित्त कर देंगे।

आपको अपनी दिनचर्या में स्वाध्याय के लिए महत्त्वपूर्ण समय रखना ही चाहिए, नहीं तो कामुकता के अश्लील विचार दिमाग में छाए रहेंगे और आप किसी भी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाएँगे।

साथियो! हम आपसे यही निवेदन करना चाहते हैं कि आप अपनी बरबादी को बंद कीजिए, संयमशील बनिए। असंयम कहते हैं- बरबादी को। जो गुण हमें पूर्वजों द्वारा विरासत में मिले हुए हैं, उनको हम अपव्यय करने में लगे हुए हैं।

मित्रो! ये सारे कीटाणु असंयम से आते हैं, जिसकी वजह से आपने अपनी सेहत खराब कर ली है। मनुष्य अपनी जीभ की नोंक से अपनी कब्र तैयार करता है। हमने जो बीमारियाँ अपने लिए पैदा की हैं, वे सब जीभ की नोंक द्वारा पैदा की हुई हैं, क्योंकि हमने जीभ की नोंक को संयम में नहीं रखा।

मित्रो! हमारी आँखें कहती हैं कि हमें तेज चाहिए हमारे कान कहते हैं कि हमें ताकत चाहिए। हमारा दिमाग कहता है कि हमें खुराक चाहिए। आपके अंदर हर तरह का 'वर्चस्' चाहिए।

आप सभी संयम की दवाई खाइए। यह दवाई शंकराचार्य, भीष्म पितामह, हनुमान् जी आदि सभी ने खाई थी। आप संयम की सस्ती दवा खाइए। यही आपको लाभ पहुँचाएगी। इसी से आपका दिल- दिमाग और स्वस्थ बनेगा।

मित्रो! आप अपनी जीभ को बुरे वचन बोलने और **भक्ष्य** खाने से रोकिए, क्योंकि इन दोनों से ही जीभ जलती है। जली हुई जीभ से भगवान् का भजन नहीं किया जा सकता।

हम किसी से ऐसे शब्द नहीं बोलेंगे, जो दूसरों को गुमराह करने वाले हों, दूसरों को पतन के मार्ग पर ले जाने वाले हों। आप संयम जीभ से शुरू कीजिए, फिर देखिए कि आपकी वाणी में चमत्कार कैसे पैदा होता है?

आपके मन में हमेशा बेकार के विचार आते रहते हैं। यदि आप थोड़ा भी संयम विचार को एकत्र करने में लगाएँ, तो आप देखेंगे कि आपके विचार क्या से क्या बन जाएँगे।

हमने अपने जीवन में स्वाध्याय का नियमित समय एक घंटे के हिसाब से रखा। पंद्रह वर्ष की उम्र से सत्तर वर्ष की उम्र तक हमने सत्तर लाख पन्ने पढ़े हैं।

अपने  विचारों पर संयम करना सीखो। अपने विचारों को समाज- सुधार के लिए अच्छी दिशा दो। आपके दिमाग व शरीर की शक्ति आपको कहाँ- से पहुँचा सकती है।

बेकार बैठे रहना भगवान् की दी हुई संपदा का तिरस्कार करना है। उसके नियमों की अवहेलना करना है। आदमी जब तक श्रमशील नहीं होगा, तब तक उन्नतिशील नहीं हो सकता। आप अपने श्रम का उपयोग समाज की उन्नति के लिए कीजिए, जिससे हमारा समाज अच्छा और सुंदर बने।

इंद्रिय संयम। इसे अपने जीवन में महत्त्व दीजिए। इंद्रियों का संयम न करने से आप अपने आप को तबाह करते जाते हैं।

आप अपने विचारों की संपदा को किन्हीं उपयोगी कार्यों में लगाना सीखिए। यदि आप ने विचारों का संयम करना प्रारंभ कर दिया, तो आपका दिमाग जिसे हम ब्रह्मलोक कहते हैं, सद्विचारों का भंडार हो जाएगा।

गुरुजी! आपकी उन्नति में कौन- कौन सहायक हुआ है? बेटे! आध्यात्मिक दृष्टि से गायत्री मंत्र हुआ है, किंतु इन सबके पीछे जो चमत्कार आपको दिखाई देता है, उसका कारण है, समय का संयम। हम समय के गुलाम हैं। हमारी प्रेमिका कौन है, जिसे देखे बिना हमें चैन नहीं पड़ता? वह है हमारी घड़ी, जो हर समय हमारी मेज पर रखी रहती है।

अर्थसंयम का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। "सादा जीवन- उच्च विचार" उन आदमियों का जीवन है, जिन्होंने अपना जीवन पहले चरण के हिसाब से जिया है।

जिन्होंने अध्यात्म में प्रवेश किया है और पैसे की दृष्टि से सामंजस्य नहीं रखा, उन्हें आगे चलकर बहुत कठिनाई उठानी पड़ सकती है। मित्रो! उन्हें जीवन की उन्नति के लिए कोई रास्ता नहीं मिलेगा।

आध्यात्मिक दृष्टि से फिजूलखर्ची एक गुनाह है। कानून चाहे आपके ऊपर मुकदमा चलाए या न चलाए, लेकिन अध्यात्म आपके ऊपर मुकदमा जरूर चलाएगा। जिस देश व समाज में आप पैदा हुए हैं, उसके औसत के हिसाब से आप खरच कीजिए। आप कमा तो सकते हैं, लेकिन अपनी कमाई को खरच नहीं कर सकते। आप अपनी कमाई में से कुछ बचत कीजिए।

भारत के नागरिकों को बड़े ही किफायत से धन खरच करना चाहिए। गाँधी जी ने बहुत कम धन में गुजारा किया।

मित्रो! हम व्यक्तिगत जीवन में भी **किफायत** कर सकते हैं। पैसा तो ऐसी चीज है कि जरा-सी मुट्ठी खुलते ही समाप्त हो जाता है।

फिजूलखर्ची को ही चोरी कहते हैं। इससे कभी भी पूरा नहीं पड़ सकता। अतः आप संयमशील बनिए और उतना ही खरच कीजिए, जिससे आपका शरीर जिंदा रह सके, परंतु अभी तो आप शरीर के लिए कम तथा विलासिता के लिए अधिक खरच करते हैं। हमारे चारों सूराखों में से हमारी उन्नति, अध्यात्म, पुण्य और लक्ष्य टपक जाता है।

देवत्व कहते हैं- गुण कर्म, स्वभाव में उत्कृष्टता को। गुणों की दृष्टि से श्रेष्ठ, कर्मों की दृष्टि से श्रेष्ठ, स्वभाव की दृष्टि से श्रेष्ठ- इतना काम करने के बाद देवता निश्चिंत हो जाते हैं, अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाते हैं।

मित्रो! दुनिया में सफलता एक चीज के माध्यम से मिलती है और वह है- **उत्कृष्ट** व्यक्तित्व। जिस व्यक्ति ने बिना मेहनत के कोई चीज प्राप्त कर ली है, उसे कहते हैं, तरकीब और तिकड़म। यदि इस तरीके से आपने कोई चीज प्राप्त कर ली है, तो वह वस्तु आपके पास नहीं ठहरेगी।

दौलत को हजम करने का तरीका होना चाहिए। जैसे- जैसे आपके पास पैसा बढ़ता जाएगा, तो आपके अंदर दोष बढ़ते जाएँगे। आप गरीबों से भी बुरे पड़ेंगे। जीवन में ऐसी विसंगतियाँ बढ़ती जाएँगी, जो आपको दौलत का फायदा पहुँचाना तो दूर आपको नुकसान ही पहुँचाएँगी। यह दौलत आपको तबाह कर देगी। संतानें बिगड़ जाएँगी, इससे तो गरीबी अच्छी है।

शिक्षा को अपने अंदर आत्मसात् करने का गुण होना चाहिए। शिक्षा के साथ मनुष्य में जिम्मेदारी भी आनी चाहिए- इसका मैं हिमायती हूँ।

## विवेक की साधना और सिद्धि
## (४ जून, १९६९ गायत्री तपोभूमि, मथुरा)

अन्नमय कोश की साधना के लिए आपको विशेष रूप से यह विचार करना होगा कि आपका आहार सात्विक है या नहीं। यहाँ अन्न से मतलब आजीविका से है। आजीविका शुद्ध होनी चाहिए।

अन्न का अपना महत्त्व है। यदि ये शुद्ध होंगे, तो साधना से सिद्धि मिलने में देर नहीं होगी। सात्विकता से सिद्धियाँ स्वतः आती हैं।

मित्रो! हमारा मन साधना-उपासना में बहुत लगता है। इसमें हमें जो आनंद आता है, उसका वर्णन हम नहीं कर सकते हैं। आपका भी मन लगे, इसके लिए आपको अन्न की सात्विकता अपनानी होगी, तभी प्रगति हो सकती है।

गर आप अपनी जीभ को साध लें, तो चमत्कार उत्पन्न हो जाएगा। आहार-विहार के असंयम के कारण ही बीमारियाँ आपको घेरे रहती हैं। इसी के कारण अभी तक आप छोटे आदमी बने रहे।

मन की साधना के दो माध्यम हैं। पहला है-विवेक और दूसरा-साहस। इनके द्वारा ही हम **ऋद्धि-सिद्धियों** से भरते चले जाते हैं। अपने आहार-विहार को ठीक करने के बाद अपनी प्रगति होती चली जाती है। मनुष्य के अंतःकरण में बैठा हुआ विवेक और साहस जब जाग्रत हो जाता है, तो इन दो आधारों पर ही मनुष्य जो चाहे प्राप्त करता हुआ चला जाता है।

आदर्शवादिता की ओर अग्रसर कर देने वाला विवेक बड़ा महान है। विवेक मनुष्य को कहाँ-से-कहाँ उछालकर ले जाता है। सिद्धियाँ मनुष्य के भीतर भरी पड़ी हैं। अगर विवेक के आधार पर हम चलें, तो सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

साथियो, बच्चों को फोकट का खिलाना ठीक नहीं है। इससे बच्चे बिगड़ जाते हैं। यह अनीति एवं अत्याचार है। बच्चों को कुसंस्कारी, भ्रष्ट एवं दुराचारी बनाना है, तो उनके हाथों में बेकार के, मुफ्त के पैसे थमा दीजिए।

अगर आप अपने बच्चों को कर्त्तव्य-परायणता का पाठ पढ़ाते चले जाएँ, तो आपके बच्चे हीरे एवं मोती के बनते चले जाएँगे, परंतु अगर आपने बेईमानी से कमाया तथा वह अन्न उन्हें खिलाया, तो उसका असर उन पर अवश्य होगा। अगर आप फोकट का धन छोड़ते हैं तथा यह सोचते हैं कि इसे बेटा खाएगा, तो यह आपकी भारी भूल है। मित्रो, इस धन को बेटा नहीं खाएगा, उसे बर्बाद करेगा।

## भक्ति का वास्तविक तात्पर्य समझें
## (कल्प साधना सत्र १९८२)

ज्ञानयोग और कर्मयोग के बाद एक मुख्य योग रह जाता है, जिसका नाम- भक्तियोग है। हम उस योग की बात कर रहे हैं, जो आदमी को भगवान् से जोड़ देता है। आत्मज्ञान इनसान को भगवान् से जोड़ देता है।

आज भक्ति के संदर्भ में लोगों के विचार विकृत हो चुके हैं। आज भावसंवेदना को, रोने को लोगों ने भक्तिभाव समझ रखा है। देवी के सामने नाक रगड़ना, उनके सामने रोना- यह भक्ति नहीं कहलाती है। उलटा बैठ जाना, सीधा बैठ जाना, आँसू बहाना- यह भक्ति नहीं है। यह भावुकता है, भक्ति नहीं। जहाँ तक आध्यात्मिक प्रगति एवं भक्ति के स्वरूप का संबंध है, यह सही नहीं है।

**भक्ति** किसे कहते हैं- इसका सीधा सादा मतलब है प्यार- मोहब्बत जिसके अंदर यह होता है, वह भावना से लबालब भरा होता है। प्यार से बड़ी कोई चीज नहीं है। इसी की तलाश में जीवात्मा रहता है।

जीवात्मा को जो स्थिर एवं चिरस्थायी आनंद परमात्मा को प्राप्त करने पर मिलता है, उसे भक्ति कहते हैं। आपने अगर इसको अनुभव करके देखा होता, तो मजा आ जाता।

मित्रो! भगवान् एक रस का नाम है, जिसे शास्त्रकारों ने **'रसो वै सः'** बतलाया है। रस किसे कहते हैं? आनंद को कहते हैं। यह आनंद कहाँ है? भगवान् में है। अगर आप भगवान् के साथ आत्मीयता जोड़ लें, तो आपको भगवान् की भक्ति का आनंद मिल जाएगा। हम भगवान् के हैं तथा भगवान् हमारे हैं, यदि ऐसी भावना मनुष्य के भीतर आ जाए, तो मजा आ जाता है। मीरा ने भगवान् को अपना पति मान रखा था। इस कारण से उस प्यार के लिए भगवान् और मीरा दोनों भूखे थे। यही भक्ति है।

आनंद एवं प्यार एक ही चीज का नाम है। अगर आपको आनंद पाना है, तो प्यार का माद्दा बढ़ाना पड़ेगा। यह दिखाना नहीं पड़ता, वरन् अंदर से उपजता है और बिना प्रतिदान की इच्छा के अपना सब कुछ औरों पर उँड़ेल देता है।

साथियो! अभी तक आपने अपना दायरा अपने शरीर तथा अपने कुटुंब तक सीमित रखा है। उस दायरे को बढ़ा दीजिए। अपने आपको सारे संसार के रूप में बढ़ा दीजिए।

मित्रो! प्यार का वास्तविक स्वरूप सेवा में ही दिखलाई पड़ता है। इसके द्वारा ही प्यार में निखार आता है। प्यार करने की पहचान ही यह है कि आप उसकी सेवा करना चाहते हैं या नहीं? प्यार करने वाला अपना अनुदान दूसरों को देता है। प्यार करने वाला स्वयं कष्ट

उठाता है तथा दूसरों को सुखी बनाता है। प्यार सेवा सिखलाता है, प्यार अनुदान देना सिखाता है। देशभक्ति, विश्वभक्ति, भगवान् की भक्ति इसी का तो नाम है।

अगर आपको हैरानी होती है, तो हो जाए, परंतु आप अपने बच्चे, देश, सारे संसार को सुखी बनाने का प्रयास करते हैं, तो वही भक्ति कहलाती है। इस दुनिया की सर्वश्रेष्ठ चीज यही है।

भक्तियोग न केवल मानसिक तथा भावनात्मक संपदा है, वरन् उसके आधार पर परमार्थ तथा पुण्य का मौका भी मिलता है। आप भक्ति कीजिए तथा सेवा कीजिए, यह दोहरा लाभ प्राप्त होता है। प्यार का वास्तविक अर्थ यही है। मनुष्य का मोह एवं बंधन उसके साथ ही होता है, जिसके साथ उसका प्यार तथा मोहब्बत होता है।

शंकर भगवान् की हम उपासना करते हैं, तो हमें शंकर की भक्ति के साथ भूत- पलीत लोगों की अर्थात् गए- गुजरे लोगों की, गरीब एवं पिछड़े लोगों की भी हमें सेवा करने के लिए तैयार रहना चाहिए। जिनकी समझदारी कम है, उनको ऊँचा उठाना चाहिए। उनकी सेवा करनी चाहिए।

सेवा हम किसकी कर सकते हैं? मित्रो! इस दुनिया में व्यक्ति उसकी ही सेवा कर सकता है, जिससे वास्तव में उसकी मोहब्बत है। अतः आप अपने **मोहब्बत का दायरा बढ़ाइए**। जैसे- जैसे आपका यह दायरा बढ़ेगा, आप सेवाभावी बनते चले जाएँगे एवं जैसे- जैसे आप सेवाभावी बनते चले जाएँगे, आपकी भक्ति भी बढ़ती चली जाएगी।

पूजा- उपासना के समय, भक्ति के समय आपने कोई मूर्ति या चित्र रखा है, तो इसमें कोई हर्ज की बात नहीं है, परंतु आप भगवान् को आदर्श एवं सिद्धांतों का समुच्चय मानिए।

आप जिस भी देवता की भक्ति करते हैं, उसका मतलब समझते हैं, उस देवता के सिद्धांतों एवं आदर्शों को मानते हैं, उस रास्ते पर चलते हैं। वास्तव में यही सच्ची भक्ति कहलाती है। अगर उन सिद्धांतों के प्रति, आदर्शों के प्रति आपकी श्रद्धा, आस्था का विकास होता चला जाएगा, तो आपकी भक्ति भी बढ़ती हुई चली जाएगी। अगर आप वास्तव में ऐसी भक्ति करेंगे, तो आपको फायदा होगा। आप सच्चे अर्थों में भगवान् के भक्त कहलाएँगे।

मित्रो! आप किसी के प्रति नफरत न करें। आप व्यक्ति से नहीं, उसकी बुराइयों से नफरत कीजिए तथा उसमें सुधार लाने का प्रयास कीजिए। आप प्यार के आधार पर भी लोगों को

बदल सकते हैं। आप किसी से राग- द्वेष न करें। आप ऐसा काम करें कि उसके व्यक्तित्व की रक्षा भी हो जाए तथा उसकी बुराई भी दूर हो जाए।

प्यार बहुत बड़ा संबल होता है, यह आप न भूलें। प्यार से मनुष्य के अंदर शांति आती है, उसके व्यक्तित्व का विकास होता है।

अगर आप अपने दृष्टिकोण तथा विचार बदल दें तथा सभी लोगों से प्यार करें, तो आप अमृतपान कर सकते हैं। यह अमृत चारों ओर बिखरा पड़ा है। आप चाहें तो उस अमृत को पी सकते हैं तथा दूसरों को भी पिला सकते हैं। यह है भक्तियोग, यह है प्यार मोहब्बत। आप चाहें तो इसे अपनाकर अपने जीवन को महान् बना सकते हैं, आत्मविकास कर सकते हैं।

मित्रो! हमने गायत्री माता से प्यार किया है और सारे समाज की सेवा की है। आप भी चाहें तो इसी प्रकार आनंद की अनुभूति कर सकते हैं तथा सब ओर से प्यार तथा आनंद प्राप्त कर सकते हैं।

**कैसे करें कायाकल्प?**
**(कल्पसत्र के दौरान १९८२ में दिया गया उद्‍बोधन)**

बंधनों से मुक्ति यह है कि जिस तरीके से हमारी विचारणाएँ, भावनाएँ हैं और हमारी क्रियाशीलताएँ हैं, जिन बंधनों से जकड़ गई हैं, उन बंधनों को हम तोड़ डालें, छोड़ दें, तो हम जीवनमुक्त हो जाते हैं। असल में यही जीवनमुक्ति है।

जीवनमुक्त आदमी होते हैं, जिनको ऋषि कहते हैं, तत्त्वदर्शी कहते हैं, जिनको मनीषी कहते हैं। मुक्ति केवल मानव जीवन में ही संभव है।

लोभ क्या है और इसे किस तरीके से तोड़ा जाए? लोभ कहते हैं- अनावश्यक संग्रह को। जिंदगी का सारे- का हिस्सा इसी में खर्च हो जाता है। आपको इस लालच में खर्च को छोड़ना पड़ेगा। आपको इस लोभ को छोड़ना पड़ेगा।

सादा जीवन का मतलब ठाटबाट से नहीं है, वरन् इसका मतलब लोभ और लालच से है। आप लोभ और लालच अपने मन से निकाल दें और निर्वाह की बात सोचें, तो आप **थोड़े- से घंटे** मेहनत करने के बाद में अपना पेट बड़े मजे में भर सकते हैं।

लोभ का बढ़ा हुआ दायरा, जो कुटुंब तक फैल जाता है, उसका नाम 'मोह' है और जो अपने आप तक सीमित रहता है, धन तक सीमित रहता है, उसका नाम 'लोभ' है और जो कुटुंबियों तक फैल जाता है, उसका नाम मोह है।

कुटुंबियों का लालच आप मत पूरा कीजिए। कुटुंबियों की अनावश्यक आवश्यकताओं को और अनावश्यक माँगों को आप मानने से इनकार कर दीजिए। तो आप क्या करेंगे? अगर वे माँगते हैं, तो भी नहीं और नहीं माँगते हैं, तो भी नहीं। जिस चीज की जरूरत है उसे दीजिए।

आपके कुटुंबियों को तीन चीजों की जरूरत है। पहली जरूरत है शिक्षा। आपके कुटुंबियों को शिक्षित होना चाहिए। स्कूली शिक्षा की बात तो मैं नहीं कहता, पर मैं यह कहता हूँ कि स्कूली शिक्षा अगर आपके पास में न भी हो, तो भी जिसको शालीनता कहते हैं, सभ्यता कहते हैं, सज्जनता कहते हैं, वह तो होनी ही चाहिए। शिक्षा का मतलब सभ्यता, शालीनता और सज्जनता से है। आप अपने घरवालों को बनाइए। उनका व्यवहार ऐसा बनाइए, उनके सोचने का तरीका ऐसा बनाइए, **जानकार बनाइए,** शिक्षित बनाइए।

शिक्षा के साथ- साथ में क्या करें? अपने हर कुटुंबी को स्वावलंबी बनाइए। किसी को परावलम्बी मत बनने दीजिए। आप अपनी पत्नी को स्वावलंबी बनाइए, गुड़िया मत बनाइए।

आप अपने कुटुंबियों में से हर एक में उपार्जन की क्षमता उत्पन्न होने दीजिए, बढ़ने दीजिए। बच्चे जरा बड़े हो गए हैं, तो उनको हाथ बँटाने दीजिए, ताकि जो वे घर का अनाज खाते हैं, उस संस्था का जरा सहयोग तो करें। उन्हें कुट्टी कूटना सिखाइए, पानी भरना सिखाइए, **शाक- वाटिका** लगाना सिखाइए, कपड़े धोना सिखाइए, ताकि वे अपने घर की आर्थिक स्थिति में कुछ मदद कर सकें। आप उन्हें स्वावलंबी बनाइए, परिश्रमशील बनाइए।

प उन्हें संस्कारवान् बनाइए, सभ्य बनाइए, शिक्षित बनाइए, स्वावलंबी बनाइए, अगर आप ये तीनों काम करने के लिए जितनी मेहनत करते हैं, हम समझते हैं कि आप अपने कुटुंबियों के लिए कर्तव्यपालन कर रहे हैं।

आप किसी को मत प्रसन्न कीजिए। प्रसन्न करना है, तो अपनी **आत्मा को प्रसन्न** कीजिए, अपने परमात्मा को प्रसन्न कीजिए। इसके अलावा इस संसार में आप जितना ही लोगों को प्रसन्न करने की कोशिश करेंगे, उतना ही आप हैरान होंगे और उतने ही आप खाली हाथ रह जाएँगे।

समय पर अगर आप अपने दिमाग को खाली कर दें कि हमको गुजारे भर के लिए कमाना है, तो आपका दिमाग, आपकी स्कीम, आपकी योजनाएँ, आपका परिश्रम और पुरुषार्थ सब बच जाएगा। फिर उस बची हुई शक्ति को- क्षमता को आप उन कामों में लगा सकेंगे, जिससे आपकी आत्मा की उन्नति होती है और समाज के प्रति अपना कर्तव्यपालन होता है और भगवान् के आदर्शों का निर्वाह होता है। उससे कम में काम बनेगा नहीं।

आपका सारा परिश्रम लोभ के लिए विसर्जित हो गया, आपकी अक्ल और आपकी भावना मोह के लिए विसर्जित हो गई। लोभ के लिए आपका शारीरिक श्रम विसर्जित हो गया, मोह के लिए भावनाएँ एवं मानसिक क्षमता विसर्जित हो गई, तो फिर क्या रह गया आपके पास?

हमारा कहना मानिए अब बच्चे मत बढ़ाइए। जो बच्चे हैं, अगर उनकी क्वालिटी बढ़ाना चाहते हैं, तो आपको संख्या घटानी चाहिए। इससे आगे तो किसी भी हालत में आगे मत बढ़ाइए। तब आपका मोह कम हो जाएगा। फिर आप एक माली के तरीके से अपने गृहस्थ का पालन कर रहे होंगे। तब आप एक सदाचारी और संयमी के तरीके से अपना गुजारा कर रहे होंगे। इन दोनों तरीकों से आप गुजारा कर लेंगे, तो मजा आ जाएगा।

इनके अतिरिक्त आपको तीसरा एक और काम करना चाहिए। अहंकार को हटाना चाहिए। आप अपने अहंकार को भी हटाइए। 'मैं' और 'मेरा' बस यही उसके दो लक्ष्य बन जाते हैं। मित्रो! यह **अहंकार बड़ा हानिकारक** है। यह आपको ले डूबेगा।

बेटे! मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आपकी महत्त्वाकाँक्षाएँ नहीं बढ़नी चाहिए। आपकी महत्त्वाकाँक्षाएँ जरूर बढ़नी चाहिए परंतु अहंकार के नाम पर, लोगों के सामने अपनी चकाचौंध पैदा करने के नाम पर, लोगों के सामने बड़ा आदमी बनने के नाम पर अगर आप अपने अहंकार का पोषण कर रहे होंगे, तो गलती कर रहे हैं।

अहंकार की दिशा मोड़ दीजिए। फिर किसमें लगाएँ? आप इस अहंकार को महानता की दिशा में लगाएँ कि हम महान् बनेंगे। आप महान् बनिए। यह विचार कीजिए कि दूसरों की तुलना में हमारे गुण, कर्म, स्वभाव अच्छे बनेंगे। आप ये विचार कीजिए न।

क्या विचार करें? आप ये विचार कीजिए कि हमको महान् बनना है। दूसरों के सामने आपको अपनी निशानियाँ छोड़ जानी हैं, ताकि वे आपके बारे में सोचते रहें, विचार करते रहें कि देखो

यह आदमी कितना शानदार था, कितना मनस्वी था, कितना धैर्यवान् था, कितना साहसी था। आप इसको बड़प्पन पर**न्यौछावर** कर सकते हैं।

संसार में जितने भी महान् आदमी हुए हैं, उन्होंने अपनी जिंदगी श्रेष्ठ कामों में लगा दी। वे लोगों के सामने उदाहरण छोड़कर चले गए। यही उनकी विरासत है।

न केवल अपने बच्चों के लिए, वरन् सारे समाज के लिए विरासत छोड़कर जाइए कि जिससे लोग यह कह सकें कि हमारे पूर्व पुरुष ऐसे थे, हमारे गाँव का निवासी ऐसा था। अमुक सज्जन ऐसा था। लोक- सम्मान अर्जित कीजिए न। आत्मसम्मान अर्जित कीजिए न। भगवान् का अनुग्रह अर्जित कीजिए न। आपको इसमें क्या दिक्कत पड़ती है? इसमें तो कोई दिक्कत नहीं पड़नी चाहिए।

बच्चों को स्वावलंबी बनने दीजिए और जो कुछ भी आपकी संपत्ति है, उससे समाज को लाभ उठाने दीजिए। संस्कृति को लाभ उठाने दीजिए।

भाइयो! बहनो! अपने **अहंकार का परिपोषण** आप उस मायने में कीजिए कि हमको महापुरुष बनना है और हम महामानव बनते हैं। अपनी चाल- ढाल और चाल- चलन ऐसा शानदार बनाते हैं कि जिससे भगवान् का अनुग्रह भी हमको प्राप्त हो सके।

अगर आप महानता की दिशा में नहीं जाएँगे, बड़प्पन की दिशा में जाएँगे, तो आपको लोभ, मोह और अहंकार इन तीन को पकड़ना पड़ेगा। इनके सहारे आपको नरक में गिरना पड़ेगा और बंधन में गिरना पड़ेगा।

मित्रो! लोभ, मोह को आप छोड़ दीजिए। आप **अहंकार की, बड़प्पन** की, अमीरी की और दूसरों की आँखों में चकाचौंध पैदा करने की हवस को छोड़ दीजिए। इसके स्थान पर आप दूसरी हवस पैदा कीजिए कि हम महान् बनेंगे। दूसरों के सामने उदाहरण पेश करेंगे।

अपनी जिंदगी का नमूना पेश करेंगे और लोगों को अपने रास्ते पर चलने के लिए, पीछे चलने के लिए हम नया रास्ता बनाकर जाएँगे। ये महानता के रास्ते हैं। अगर आप महानता के रास्ते पर चल पड़ें, तो आपके जीवन की मुक्ति हो गई।

जीवनमुक्त जैसे इसी जिंदगी में आनंद उठाते हैं। मजा उड़ाते हैं और सारे विश्व में पंख लगाकर स्वच्छंद उड़ते चले जाते हैं, जैसे कि पखेरू सारे **विश्व में उड़ता** हुआ चला जाता है।

अधिक जानकारी के देखें http://hindi.awgp.org/